सी एम एफ आर आइ
CMFRI

भाकृअनुप
ICAR

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. 147 अक्तूबर - दिसंबर 2015 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

एशिया में पिंजरा जलकृषि पर कोच्ची में आयोजित 5वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा के उद्घाटन कार्यक्रम का दृश्य

कृपया पृष्ठ सं. 3 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

कडलमीन
കടൽമീൻ
கடல்மீன்
कडलमीन

विषय सूची

सी एम एफ आर आइ में एशिया में पिंजरा जलकृषि (सी ए ए 5) पर 5वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा	3
अनुसंधान मुख्य अंश	14
प्रशिक्षण / विस्तार	17
प्रतिनिधि / आगंतुक	19
पुरस्कार	19
स्वच्छ भारत	21
राजभाषा कार्यान्वयन	21
कृ वि कें (एरणाकुलम) समाचार	22
कार्यक्रम में सहभागिता	23
मानव संपदा विकास	24
कार्मिक समाचार	26

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
भा कृ अनु प - केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष : 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मैल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यु. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी अनुवाद

ई. के. उमा

निदेशक कहते हैं

सब को हार्दिक नमस्कार

भारत में समुद्र कृषि से समुद्री मछली उत्पादन बढ़ाने की काफी संभाव्यता है, हालांकि देश में पिंजरे में मछली पालन अब भी प्रारंभिक विकास के चरण में है। भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ ने भारत में खुला सागर पिंजरा मछली पालन में कई अनुसंधान किया मार्ग है और कोबिया और सिल्वर पोम्पानो जैसे कई वाणिज्यिक प्रमुख खाद्य मछलियों के प्रजनन एवं संतति उत्पादन पहली बार सफलता हासिल की है। आगामी वर्षों में अन्य मछली ग्रुपों जैसे ग्रूपर और रेड स्नाप्पर मछलियों के लिए भी इसी सफलता प्राप्त करने के लिए अनुसंधान व विकास के प्रयास जारी हैं। इस संदर्भ में, संस्थान द्वारा आयोजित एशिया में पिंजरा जलकृषि पर 5वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा कई अनुसंधान विचार-विमर्शों का गवाह बन गया है और ये आवश्यक प्रौद्योगिकियों के विकास में सहायक निकलेंगे। कई सिफारिशों से यह व्यक्त हुआ कि भारत में नीली क्रांति होने के लिए यह परिचर्चा सहायक होगी। यह आयोजन सफल बनाने के लिए प्रयास किए गए सभी व्यक्ति अभिनन्दन के पात्र हैं। इस अवधि के दौरान, पशु पालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग (डी ए एच डी एंड एफ) के सहयोग से राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2016 की योजना पूरी की गयी और तटीय मत्स्यन गाँवों और मछुआरों से संग्रहित समाज-अर्थशास्त्र, अवसंरचना और अन्य संबंधित मामलों के आंकडों के डाटाबेस का प्रपत्र डिजिटाइस किया जाएगा। देश के लिए मात्स्यिकी विकास योजनाएं या नीतियाँ के बनाने के दौरान यह महत्वपूर्ण हो जाएगा। केन्द्र सरकार द्वारा नयी राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति तैयार करने के लिए विविध क्षेत्रों से गुणभोक्ताओं के मतों को सफल रूप से इकट्ठा किया जा सका। नए वर्ष 2016 में प्रवेश करने के इस अवसर पर यह संतोष की बात है कि भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ का पुरी क्षेत्र केन्द्र खोला गया है, जो अनुसंधान कार्यों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा समुद्री मछुआरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अथक प्रयास करेगा। नए वर्ष पर नयी ताक़त और निष्ठा से अपना काम करेंगे और सब को सफलतापूर्वक नया वर्ष 2016 की शुभकामनाएं अदा करता हूँ।

अ. गोपाल

डॉ.ए.गोपालकृष्णन
निदेशक

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

सी एम एफ आर आइ में एशिया में पिंजरा जलकृषि (सी ए ए 5) पर 5वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन

स्मारिका का विमोचन (बाएं से दाएं) डॉ. ए. गोपालकृष्णन, डॉ. आलीस जोन फेरेर, डॉ. जे. के. जेना, डॉ. एस. अय्यप्पन, डॉ. डेरेक स्टेपिल्स, प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल और डॉ. मृदुला राजेश

भाकृ अनु प - केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और एशियन फिशरीस सोसाइटी (ए एफ एस) की भारतीय शाखा द्वारा 25-28 नवंबर 2015 के दौरान कोच्ची, भारत में एशिया में पिंजरा जलकृषि (सी ए ए 5) पर 5वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा आयोजित की गयी। परिचर्चा के दिनांक 25 नवंबर 2015 को आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, संयोजक, सी ए ए 5 एवं निदेशक, भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर भारत, नोरवे, इन्डोनेशिया, युनाइटड किंगडम, कोरिया और फिलिप्पीन्स के आमंत्रित व्यक्ति और प्रतिनिधि उपस्थित थें। उन्होंने कोच्ची में इस महान कार्यक्रम, जिस में परिचर्चा विषयक चर्चा, हर एक सत्र के लिए मुख्य भाषण और पिंजरा जलकृषि में प्रमुख अनुसंधानकारों और विशेषज्ञों के मुख्य भाषण सम्मिलित थे, के आयोजन के लिए एशियन फिशरीस सोसाइटी को कृतज्ञता अदा किया। कार्यक्रम में भारत के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त 10 देशों (नोरवे, यू के, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया, इन्डोनेशिया, वियट नाम, फिलिप्पीन्स, थायलान्ड, इरान, चीन) से कुल 252 प्रतिनिधि गण उपस्थित थे। परिचर्चा में परिचर्चा विषयक एक भाषण, 6 मुख्य भाषण, 17 प्रमुख भाषण, 141 सारांश, 42 मौखिक और 75 पोस्टर प्रस्तुतीकरण किए गए। पिंजरा जलकृषि, उत्पादों एवं सेवाओं की प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी, जिसमें 21 प्रदर्शकों ने अपने स्टॉल में उत्पादों / सेवाओं का प्रदर्शन किया। पिंजरा जलकृषि के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों और अद्यतन विकासों से संबंधित 6 सत्रों में प्रस्तुतीकरण हुए। इस तरह के कुल 200 प्रस्तुतीकरणों का सारांश पुस्तक के रूप में तैयार करके कार्यक्रम के दौरान विमोचन किया गया। सी ए ए 5 के संयोजक ने आशा प्रकट की कि भारत में जलकृषि के विकास में योगदान करने के लिए भा कृ अनु प, एम पी ई डी ए, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों के उद्देश्यों और पहल को पूरा करने में यह परिचर्चा सहायक निकलेगी और इस से जलकृषि को टिकाऊ आधार पर कायम रखने का अवसर मिल जाएगा।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, संयोजक, सी ए ए 5, निदेशक, भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ स्वागत भाषण देते हुए

इस अवसर पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, उप राष्ट्रपति श्री मोहम्मद हमीद अनसारी, केन्द्र कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह, केरल के माननीय मुख्य मंत्री

मुख्य अतिथि डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महा निदेशक, भा कृ अनु प भाषण देते हुए

सम्मानित अतिथि प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल, सी ए जी, ए एफ एस, मलेशिया भाषण देते हुए

डॉ. जे. के. जेना, अध्यक्ष, ए एफ एस आइ बी एवं उप महा निदेशक (मत्स्यिकी), भा कृ अनु प अध्यक्षीय भाषण देते हुए

श्री उम्मन चान्डी और अध्यक्ष, एशियन फिशरीस सोसाइटी, प्रोफसर षौलिन हुयांग से प्राप्त बधाई संदेश पढ़े गए।

स्वागत भाषण के बाद डॉ. आलिस जोअन फेरेर, उपाध्यक्ष, एशियन फिशरीस सोसाइटी, मलेशिया ने ए एफ एस की गतिविधियों पर संक्षिप्त विवरण दिया। डॉ. एस. इज़ेड. क्वासिम, आजीवन सदस्य, ए एफ एस, प्रोफसर एच. पी. सी. शेट्टी, स्थापक अध्यक्ष, ए एफ एस आइ बी एवं भूतपूर्व ए एफ एस काउन्सिलर और श्री जे. वी. एच. दीक्षितिलु, भूतपूर्व प्रबंध संपादक, फिशिंग टाइम्स की दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. जे. के. जेना, अध्यक्ष, ने खुले समुद्र में पिंजरा मछली पालन प्रोत्सहित करने के लिए सरकार की तरफ से नीतियाँ बनायी जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि सिंपोसियम का वर्तमान नारा न केवल मछली सब के लिए आज और कल, बल्कि हमेशा के लिए है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत नोरवे, चिली और चीन जैसे देशों से संकेत ले सकता है।

सम्मानित अतिथि प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल, भूतपूर्व सदस्य, ए एस आर बी एवं सदस्य, परामर्श ग्रुप परिषद (सी ए जी), ए एफ एस कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि थे। सी ए ए 5 के प्रति दिखायी गयी भागीदारों की प्रतिक्रिया पर उन्होंने अपना संतोष प्रकट किया और भारत में पिंजरा मछली पालन की बाल्यावस्था के इस अवसर पर इस सम्मेलन का आयोजन सफल बनाने के लिए किए प्रयास का उन्होंने अभिनन्दन किया। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ मछली न केवल एक खाद्य वस्तु है, बल्कि रोज़गार का उपाय है, पिंजरा मछली पालन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने व्यक्त किया कि अब एशिया जलकृषि में महाशक्ति हो रहा है। उन्होंने पर्यावरणीय सुरक्षा, उद्यमिता, उपभोक्ता स्वास्थ्य आदि मामलों पर जोर दिया और जलकृषि से लाभ उठाने के एशियन देशों की साध्यताओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने देशों के बीच स्पर्धा नहीं होनी चाहिए, बल्कि भविष्य में परिस्थिति अनुकूल पिंजरा मछली पालन करने के लिए एशियन देशों के ठोस प्रयास से कुशलताओं, ज्ञान और विशेज्ञता आपस में बांटने के बारे में भी ज़ोर दिया।

डॉ. डेरिक स्टेपिल्स, तत्काल पूर्व अध्यक्ष, ए एफ एस ने अपने भाषण में एशियन देशों के बीच संपर्क होने के संबंध में एशिया के मात्स्यिकी समाज को प्रमुख सुधार से गुजरना पड़ता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने सारांश पुस्तक और स्मारिका का विमोचन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने व्यक्त किया कि कोच्ची में सी ए ए 5 का आयोजन अत्यंत उचित हुआ है क्योंकि कोच्ची को भारत की मात्स्यिकी राजधानी कहा जा सकता है। उन्होंने वर्ष 1982 में डॉ. कुमरय्या के साथ पहली बार मीठा पानी में किए गए पिंजरा मछली पालन के अनुभव का विवरण दिया। उन्होंने यह व्यक्त किया कि हमारा भोजन अनाज से मांस और मछली तक विविध हो रहा है और आज की सब से प्रमुख समस्या जलवायु परिवर्तन की है, जिसका भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ अभिसंबोधन कर रहा है। भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ द्वारा वेरावल, कारवार, मंडपम और कोच्ची में पिंजरा मछली पालन में हासिल की गयी सफलता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि प्रग्रहण

डॉ. आलिस जोअन फेरेर भाषण देती हुई

डॉ. डेरिक स्टेपिल्स, तत्काल पूर्व अध्यक्ष, ए एफ एस भाषण देते हुए

मात्स्यिकी और जलकृषि में पर्यावरण अनुकूल एवं टिकाऊ परिचालन करना आज की आवश्यकता है। उन्होंने आशा प्रकट की कि भारत और नोरवे, जो पिंजरा मछली पालन के लिए मशहूर है, के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने में यह परिचर्चा अवसर प्रदान करेगी। उन्होंने यह भी बताया कि भारत के युवा लोग चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहे हैं और पिंजरा मछली पालन उनके लिए इस तरह का अवसर बन जाएगा। उन्होंने आगे पानी के बहुविध उपयोग के बारे में ज़ोर देते हुए झारखंड में जलाशयों में सफल रूप से पिंजरा मछली पालन करने के लिए युवा लोगों का अभिनन्दन किया। उन्होंने बताया कि भारत में पिंजरा जलकृषि के आगे के विकास के लिए संतति की उपलब्धता, खाद्य, कुशलता और मानसिकता की आवश्यकता है। इस बात पर ज़ोर देते हुए कि भूमि से जल स्रोतों तक खाद्य उत्पादन के लिए प्रतिमान परिवर्तन के लिए पिंजरा मछली पालन अवसर प्रदान कर सकता है, डॉ. अय्यप्पन ने भागीदारों को अच्छे प्रस्तुतीकरण का अभिनन्दन करते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

भारत में पिंजरा मछली पालन के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान किए गए विशेषज्ञों को इस अवसर पर ए एफ एस आइ बी अनुसंधान एवं विकास नवोन्मेष पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें श्री संजय वी. रावत, अध्यक्ष (टेकनिकल्स & न्यू बिसिनेस), गारवेर-वॉल रोप्स लिमिटड, पुणे, डॉ. तम्पी समराज, निदेशक, राजीव गांधी जलकृषि केन्द्र, एम पी ई डी ए, कोच्ची, प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल, भूतपूर्व सदस्य, ए एस आर बी एवं भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. जी. सैदा रावु, भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. जी. गोपकुमार, एमरिटस वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और डॉ. पी. कुमारय्या, भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए सम्मिलित थे। डॉ. मृदुला राजेश, खजांची, ए एफ एस आइ बी ने कृतज्ञता अदा किया।

परिचर्चा में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में डॉ. वी. वी. सुगुणन और डॉ. मदन मोहन (भूतपूर्व सहा. महानिदेशक गण (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प), डॉ. पी. एस. बी. आर. जेम्स, डॉ. वी. एन. पिल्लै (भूतपूर्व निदेशक गण, सी एम एफ आर आइ), डॉ. एस. डी. त्रिपाठी (भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई), डॉ. एस. डब्लियु.ए. नाकवी, निदेशक, सी एस आइ आर-एन आइ ओ, गोवा, डॉ. पी. रविशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, डॉ. के. के. विजयन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ बी ए, चेन्नई और डॉ. पी. जयशंकर, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए, भुवनेश्वर प्रमुख थे और इनके अतिरिक्त मात्स्यिकी एवं जलकृषि के क्षेत्र प्रसिद्ध व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल ने परिचर्चा विषयक मुख्य भाषण "ग्रीनिंग दि एशियन कैज अक्वाकल्चर कन्स्ट्रक्ट" प्रस्तुत किया। श्री ट्रोन्ड सेवेरिन्सन (नोरवे) (समुद्री उत्पादन व्यवस्था), डॉ. वी. वी. सुगुणन (अंतःस्थलीय उत्पादन व्यवस्था), डॉ. जी. गोपकुमार (प्रजनन एवं संतति उत्पादन), डॉ. पी. ई. विजय आनन्द, यु एस एस सी (पोषण एवं खाद्य), डॉ. ब्राइट जेल्टनेस (नोरवे) (स्वास्थ्य एवं पर्यावरण प्रबंधन) और डॉ. मारियस डालेन (नोरवे) (अर्थशास्त्र, आजीविका एवं नीति) ने मुख्य भाषण दिए। सभी सत्रों में भारत तथा विदेशों के विभिन्न संगठनों के प्रमुख वक्ताओं और वैज्ञानिकों द्वारा मुख्य भाषण प्रस्तुत किए गए। इनमें डॉ. नील्स स्वेन्नेविग (वियटनाम), डॉ. क्लाइव जोण्स (आस्ट्रेलिया), डॉ. के. जी. पद्मकुमार (भारत), डॉ. ए. के. दास (भारत), श्री उत्तम कुमार सुबुद्धी, आइ एफ एस (भारत), डॉ. अस्मन्ड जोरडाल, निदेशक, आइ एम आर (नोरवे), डॉ. केटूट सुगामा (इन्डोनेशिया), डॉ. क्रिस्टफर लन्डे, ई डब्लियु ओ एस (नोरवे), प्रोफसर ट्रेवर प्लाट (प्लाइमाउथ, अब जवहरलाल नेहरु विज्ञान अध्येता, भारत), डॉ. के. के. विजयन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ बी ए (भारत), डॉ. इन्द्राणी करुणासागर (भारत), डॉ. मुरवानटोको (मात्स्यिकी विभाग, कृषि संकाय (इन्डोनेशिया), डॉ. पी. रविचन्द्रन, सदस्य सचिव, तटीय जलकृषि प्राधिकरण, (भारत), श्री सुरेश कुमार, डी जी एम, नबार्ड, (भारत) और श्री जेकब जोसफ, सहायक प्रोफसर, एन यु ए एल एस, (भारत) प्रमुख थे। हर सत्र में भारत और विदेशक के विभिन्न संगठनों के वैज्ञानिकों एवं छात्रों द्वारा मौखिक तथा पोस्टर प्रस्तुतीकरण भी थे। डॉ. डेरिक स्टेपिल्स, ए एफ एस

परिचर्चा के प्रतिनिधि गण

समुद्री उत्पादन व्यवस्था पर सत्र I में प्रोफसर ट्रेवर प्लेट मुख्य भाषण देते हुए

समुद्री उत्पादन व्यवस्था पर सत्र I में श्री ट्रोन्ड सेवेरिन्सन (नोरवे) मुख्य भाषण देते हुए

सत्र II में डॉ. अस्मन्ड जोरडाल (निदेशक, समुद्री अनुसंधान संस्थान, नोरवे) प्रमुख भाषण देते हुए

प्रजनन एवं संतति उत्पादन पर सत्र III में डॉ. डॉ. केटूट सुगामा (इन्डोनेशिया) प्रमुख भाषण देते हुए

(मलेशिया) ने प्रदर्शनी और विपणन का उद्घाटन किया, जिस में राज्य एवं केन्द्र सरकार की एजेन्सियों, भा कृ अनु प के संस्थानों, मात्स्यिकी विश्वविद्यालयों, उद्यमियों, बैंकों और गैर सरकारी संगठनों के कुल 22 स्टॉल थे।

सी ए ए 5 का पूर्ण अधिवेशन और समापन सत्र 27 नवंबर, 2015 को आयोजित किया गया। डॉ. श्यामसुन्दर, सचिव, ए एफ एस आइ बी के स्वागत भाषण के बाद डॉ. एस. डी.

पोषण और खाद्य पर सत्र IV में
डॉ. क्रिस्टफर लन्डे (नोरवे) प्रमुख भाषण देते हुए

स्वास्थ्य और पर्यावरण प्रबंधन पर सत्र V में
डॉ. ब्राइट जेल्टनेस (नोरवे) प्रमुख भाषण देती हुई

अर्थशास्त्र, आजीविका एवं नीति पर सत्र VI में
डॉ. मारियस डालेन (नोरवे) प्रमुख भाषण देते हुए

त्रिपाठी, डॉ. के. के. फिलिपोस, संयोजक, अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (समुद्री संवर्धन), डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रभारी अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ और डॉ. डेरिक स्टेपिल्स ने परिचर्चा के बारे में अपनी राय प्रकट की और परिचर्चा की सफलता का अभिनन्दन किया। डॉ. जे. के. जेना, अध्यक्ष, ए एफ एस आइ बी ने समापन भाषण और परिचर्चा के सिफारिश प्रस्तुत किए। प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल ने उत्कृष्ट तीन लेखों और पोस्टरों के पुरस्कारों की घोषणा की। मत्स्यफेड, केरल को, मछुआरों को नाममात्र की कीमत में जाल प्रदान करते हुए देश में पिंजरा मछली पालन को सहायता देने के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वीकार करते हुए श्री वी. दिनकरन, अध्यक्ष, मत्स्यफेड एवं भूतपूर्व एम एल ए ने बताया कि भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को पिंजरा मछली पालन के प्रयासों के लिए आगे भी सहायता जारी की जाएगी। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ एवं संयोजक, सी ए ए 5 द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल को ए एफ एस आइ बी आर एंड डी नवोत्थान पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

गारवेर-वॉल रोप्स लिमिटड को ए एफ एस आइ बी आर एंड डी नवोत्थान पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

डॉ. जी. गोपकुमार को ए एफ एस आइ बी आर एंड डी नवोत्थान पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

डॉ. पी. कुमरय्या को ए एफ एस आइ बी आर एंड डी नवोत्थान पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

श्री वी. दिनकरन, अध्यक्ष, मत्स्यफेड को पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य

डॉ. डेरिक स्टेपिल्स द्वारा विपणन प्रदर्शनी का उद्घाटन

डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक,
भा कृ अनु प का सी एम एफ आर आइ के स्टॉल में मुआइना

डॉ. जी. ग्रिनसन और टीम को उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार

सी ए ए 5 के सिफारिश

एशिया क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और आजीविका पर पिंजरा जलकृषि की उभरती हुई प्रधानता पर विचार करते हुए सी ए ए 5 यह सिफारिश देती है

1. एशिया के सभी देशों में सब के हित के लिए सूचनाओं के आदान-प्रदान करने के द्वारा पर्यावरण और संपदा अनुकूल, टिकाऊ और सम्मिलित तरीके से पूर्वोपाय विकास कार्यसूची।
2. सुरक्षित मछली प्रदान करने के लिए उत्तम प्रबंधन व्यवहार से एशिया के देशों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए सहकारी प्रयास।
3. भूमि और समुद्री पिंजरा जलकृषि पर ज़ोर देते हुए हर एक देश में पालन करने योग्य देशी मछली प्रजातियों के प्रजनन और पालन की प्रौद्योगिकियों का विकास।
4. मछली खाद्य और मछली तेल के कम उपयोग पर ज़ोर देते हुए खाद्य विकास पर अनुसंधान और एशिया क्षेत्र में पिंजरा जलकृषि के लिए प्रयाशित प्रजातियों के लिए खाध प्रबन्धन पहूंच।
5. देश विशिष्ट रागों की निगरानी उपायों का विकास एवं प्रबंधन और अब चालू रोगों के लिए प्रबंधन योजनाएं और आगे रोगों को रोकने के उपाय।
6. बहुजातीय मछली पालन में अनुसंधान एवं विकास पर ज़ोर, और मछली, मोलस्क, समुद्री शैवाल और अपमार्जकों को मिलाकर पर्यावरणीय अवनति रोकने के लिए बहु पौष्टिकता के खाद्य की तैयारी के लिए ज़ोर दिया जाना।
7. पड़ोसी देशों से जलीय पर्यावरण पर विपरीत असर न होने के लिए भूमिगत और समुद्री जलाशयों से अधिकतम जैव भार उत्पादन करन के लिए एकता का दृष्टिकोण पर विचार देते हुए हर देश के लिए राष्ट्रीय नीतियों का विकास और अंगीकार।
8. स्थानीय क्षेत्र विकास योजना, पर्यावरणीय सुरक्षा और उपभोक्ता अधिकार को विचार करते हुए पिंजरा जलकृषि के लिए स्थान का मानचित्रण, और इसके बाद पालन स्थानों की अधिसूचना और सीमांकन पर हर देश को ध्यान दिया जाना है ताकि समरसतापूर्वक विकास हो जाएगा।
9. वर्धित निवेश और उद्यमिता विकास को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वाणिज्यिक तौर के पिंजरा मछली पालन में निजी-सार्वजनिक सहभागिता की सुविधा दी जानी चाहिए।
10. अनुसंधान, प्रशिक्षण और मानव संपदा विकास में सहकारी कार्यक्रमों द्वारा पिंजरा जलकृषि के विकास के लिए जानकारी और कुशलता का आदान-प्रदान किया जाना चाहिए।

डॉ. एम.के. अनिल और टीम को उत्तम लेख प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार

डॉ. के. मधु और टीम को उत्तम पोस्टर प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार

डॉ. पी. ए. विकास और टीम को उत्तम पोस्टर प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की सी ए ए 5 कोर समिति
डॉ. ए. गोपालकृष्णन, संयोजक, सी ए ए 5 के साथ

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के राष्ट्रीय समुद्री जैवविविधता संग्रहालय में प्रतिनिधि गण

सी ए ए 5 के भाग के रूप में आयोजित रात्रिभोजन में प्रतिनिधि गण

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक
आमंत्रित वक्ताओं और ए एफ एस
तथा ए एफ एस आइ बी टीम के साथ
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में

समापन कार्यक्रम में डॉ. बी. श्यामसुन्दर, सचिव, ए एफ एस आइ बी भाषण देते हुए सत्र का दृश्य

सत्र का दृश्य

समापन कार्यक्रम में डॉ. अस्मन्ड जोरडाल डॉ. ए. गोपालकृष्णन को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए

सभा का दृश्य

"कैज अक्वाकल्चर ऐमिंग स्काइ हाइ" - श्री के. एम. डेविड द्वारा रचित परिचर्चा पेइन्टिंग

लॉगो और वेबसाइट का टीमः श्री पी. आर. अभिलाष, श्री के. एम. डेविड और श्री मनु वी. के.

सांस्कृतिक संध्या का दृश्य

आतिथेय संस्थान भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का दृश्य

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पुरी क्षेत्र केन्द्र का उद्घाटन

भाकृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पुरी क्षेत्र केन्द्र का औपचारिक उद्घाटन 7 दिसंबर 2015 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने किया। इस अवसर पर उड़ीषा राज्य सरकार के विशिष्ट व्यक्तियों जैसे श्री पी. कृष्ण मोहन, आइ एफ एस, मात्स्यिकी निदेशक, श्री बसंत दास, उप निदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), श्रीमती उर्बशी बेहरा, मात्स्यिकी अतिरिक्त निदेशक और श्री शशि कांत मिश्रा, सहायक इंजिनीयर, सी पी डब्लियु डी, उड़ीषा भी उपस्थित थे। डॉ. (श्रीमती) रीता जयशंकर, प्रभारी वैज्ञानिक, पुरी क्षेत्र केन्द्र ने अपने स्वागत भाषण में, केन्द्र की स्थापना के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए श्री सत्यब्रत साहू, आइ ए एस, भूतपूर्व आयुक्त एवं सचिव, पशु संपदा विकास विभाग (मात्स्यिकी) और श्री बिष्णुपादा सेथी, आइ ए एस को धन्यवाद प्रकट किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने गुणभोक्ताओं की समस्याओं का संबोधन करने में राज्य और केन्द्र मात्स्यिकी विभागों के बीच की सहकारिता का अभिनन्दन किया

निदेशक पुरी क्षेत्र केन्द्र के कर्मचारियों और विशिष्ट व्यक्तियों के साथ

और केन्द्र की तकनीकी सहायता से उड़ीषा में पिंजरा मछली पालन, तटीय जलकृषि और समुद्री शैवाल पालन में सहकारिता द्वारा समुद्री मात्स्यिकी की गतिविधियों की साध्यता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में उपस्थित मछुआरों ने केकड़ा और पखमछली पालन के लिए चेन्नई और मंडपम से संतति मिलने की समस्या व्यक्त की और उड़ीषा में भी इस तरह की स्फुटनशालाएं सजाने का अनुरोध किया। औपचारिक उद्घाटन के बाद विशिष्ट व्यक्तियों ने केन्द्र में विकसित प्रयोगशाला और स्फुटनशाला सुविधाओं का मुआइना किया।

समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2016

देश के सभी समुद्रवर्ती राज्यों और दो संघ राज्य क्षेत्रों में भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ के नेतृत्व में राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2016 आयोजित की जानी है। आन्डमान एवं निकोबार तथा लक्षद्वीप समूह में भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण के नेतृत्व में गणना की जाएगी। जनगणना कार्यों के अंदर समुद्री मछुआरा परिवारों, मत्स्यन यानों एवं जालों, मत्स्यन गाँवों के शैक्षिक सूचनाएं तथा जनसांख्यिकीय विशेषताओं के बारे में सूचना संग्रहित करना आदि सम्मिलित हैं। पिछली जनगणना वर्ष 2010 में आयोजित की गयी थी। संस्थान की सहकारिता से आयोजित की जाने वाली जनगणना के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग (डी ए एच डी एफ) द्वारा वित्तीय सहायता दी जा रही है। पर्यवेक्षकों और प्रत्याशित गणनाकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग (एफ आर ए डी) ने संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय / अनुसंधान केन्द्रों में जनगणना पूर्व कार्यशालाएं आयोजित कीं। विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में 19-20 नवंबर, 2015 को कार्यशाला आयोजित की गयी। डॉ. मिनी के. जी., वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. रीता जयशंकर, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ पुरी क्षेत्र केन्द्र और श्री विवेकानन्द भारती, वैज्ञानिक ने प्रशिक्षण आयोजित किए। तमिल नाडु, दक्षिण आंध्रा प्रदेश और पुतुचेरी यू टी के क्षेत्र, जिला और राज्य स्तरीय पर्यवेक्षकों के लिए 17 और 18 नवंबर, 2015 को डॉ. ग्रिनसन जोर्ज, वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री विल्सन टी. मात्यु, वैज्ञानिक और श्री डी. पुगषेन्दी, तकनीकी अधिकारी ने प्रशिक्षण दिए। केरल और माही के लिए 12 और 13 नवंबर, 2015 को कार्यशाला आयोजित की गयी। डॉ. सोमी कुरियाकोस, प्रधान वैज्ञानिक और श्री मनु वी. के., वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने कर्नाटक और गोवा राज्यों के लिए 1 और 2 दिसंबर, 2015 को मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में कार्यशाला आयोजित की। डॉ. टी. वी. सत्यानन्दन, प्रधान वैज्ञानिक और श्रीमती के. रमणी सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में उत्तर गुजरात और दियु संघ राज्य क्षेत्र के पर्यवेक्षकों के लिए 18 और 19 नवंबर 2015 को और महाराष्ट्र, दक्षिण गुजरात और दामन संघ राज्य क्षेत्र के लिए 20 और 21 नवंबर 2015 को प्रशिक्षण दिए।

संस्थान द्वारा प्रशिक्षित लगभग 3000 गणनाकार देश के 73 जिलाओं के 4250 समुद्री मत्स्यन गाँवों में फैले गए 11 लाख मछुआरा परिवारों से मुलाकात करेंगे। जनगणना के प्रभावकारी पर्यवेक्षण और समन्वयन के लिए 26 केन्द्रों में करीब 220 कार्मिकों की तैनाती की गयी है। समुद्री मछुआरा परिवारों से मछली प्रसंस्करण, इस्तेमाल, विपणन और मूल्य वर्धन की सूचनाओं के अतिरिक्त उनके सामाजिक, शैक्षिक और मत्स्यन पहलुओं पर सूचना संग्रहित करने के अनुरूप अनुसूची तैयार की गयी है। मत्स्यन गाँवों

सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में "समुद्री मात्स्यिकी जनगणना-2016" पर कार्यशाला के भागीदारों का दृश्य

में मौजूद अवसंरचना की सुविधाओं और विभिन्न तटीय जिलाओं में उपलब्ध अन्य मछली संग्रहण एवं प्रसंस्करण की सूचना भी संग्रहित की जा रही है। घरेलू सर्वेक्षण के लिए उपयुक्त की जाने वाली अनुसूची का उपयोग सुगम बनाने हेतु इसका आठ क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। अनुसूची के अतिरिक्त इस कार्य में लगे हुए कार्मिकों को संग्रहित की जाने वाली सूचनाओं का स्पष्टीकरण करने के लिए अनुदेश पुस्तिका भी प्रदान की गयी है। समुद्री सेक्टर में मात्स्यिकी से संबंधित योजनाएं और नीतियाँ तैयार करने हेतु सहायक विस्तृत जनगणना डाटाबेस विकसित करने के लिए भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ द्वारा इस आंकड़े का विश्लेषण किया जाएगा।

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित कार्यशाला का दृश्य

राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति पर गुणभोक्ताओं की राय विकसित करने हेतु ऑनलाइन सर्वेक्षण

राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति बनाने का कार्य सौंपी गयी समिति ने 84 मुख्य प्रश्नों के सेट द्वारा गुणभोक्ताओं की विभिन्न राय रिकार्ड की गयी हैं, जो डी ए एच डी एफ और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वेबसाइट में प्रिन्ट (ऑफ लाइन) और ऑन लाइन में उपलब्ध है। मुद्रित प्रश्नावली प्रपत्र की प्रतियाँ देश के करीब 1000 मात्स्यिकी संगठनों को भेजी गयी हैं। क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया में इसका व्यापक प्रचार दिया गया है। प्रारंभ में प्रपत्र प्रस्तुत करने के लिए 45 दिनों की अवधि (अक्तूबर 26 से दिसंबर 10, 2015 तक) दी गयी थी, लेकिन वर्धित मांग के अनुसार अवधि 6 दिनों तक बढ़ायी गयी। डाक द्वारा प्राप्त प्रस्तुतीकरण इसके बाद भी जारी हुई और दिसंबर 31 तक प्राप्त सभी प्रतिक्रियाएं विश्लेषण के लिए सम्मिलित की गयीं। ऑन लाइन प्रपत्र के लिए स्पाम और हैकेर्स से संरक्षण देने हेतु पर्याप्त साइबर सुरक्षा दी गयी।

नमूना समुद्री पिंजरा खेत से पालित महाचिंगटों का संग्रहण

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने तूत्तुकुडी के सिप्पिकुलम के मछुआरों के साथ सहभागिता तरीके से सितंबर 2015 महीने में समुद्री पिंजरा जाल में महाचिंगट और कोबिया मछली का पालन शुरू किया। गालवनाइस्ड अयेर्न (जी आइ) के प्लवमान जाल-पिंजरे (7 मी. व्यास और 3 मी. ऊँचाई) में महाचिंगटों का पालन किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के तकनीकी मार्गदर्शन में मछुआरों द्वारा अनुरक्षण किए गए पिंजरे में निकटस्थ मछली अवतरण केन्द्रों से खरीदे गए 60 ग्राम भार वाले 550 छोटे महाचिंगटों का संभरण किया गया। तीन महीनों के बाद महाचिंगट 225 ग्राम तक बढ़ गए और संग्रहित महाचिंगटों का मूल्य लगभग 1.8 लाख रुपए था। तूत्तुकुडी के सिप्पिकुलम गाँव में दिसंबर 2015 महीने में संग्रहण मेला आयोजित की गयी। डॉ. पी. पी. मनोजकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने सभा का स्वागत किया। श्री अमल सेवियर, मात्स्यिकी संयुक्त निदेशक (क्षेत्रीय), टूटिकोरिन ने संग्रहण मेले का उद्घाटन किया और पिंजरा मछली पालन के लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार की विविध योजनाओं के बारे में मछुआरों को सूचित किया। श्री सी. कालिदास, वैज्ञानिक ने समुद्री पिंजरा मछली पालन पर तकनीकी विवरण दिया। श्री एम. कुमरेशन, महाचिंगट पालन उद्यमी, श्री ज्ञानराज, समुद्री पिंजरे में महाचिंगट का पालनकार और श्री रेक्सन, समुद्री पिंजरे में कोबिया मछली का पालनकार ने सिप्पिकुलम में पिंजरा मछली पालन पर अपने अनुभव बांट दिए। डॉ. सी. एस. षाइन कुमार, उप निदेशक, एम पी ई डी ए ने गाँव से जीवित तथा हिमशीतित मछलियों के निर्यात के लिए दी जाने वाली सहायिकियों के बारे में बताया। इस अवसर पर रेव. राजा रोड्रिगो, सिप्पिकुलम और श्री आइसक जयकुमार, मात्स्यिकी सहायक निदेशक (समुद्री) ने भी भाषण दिए। सिप्पिकुलम मछुआरा सहकारी संघ के प्रतिनिधि गण और मछुआरे लोग भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। गाँव में पहली बार आयोजित इस तरह के कार्यक्रम से प्रेरित होकर अन्य मछुआरा परिवार के सदस्य भी समुद्री पिंजरा मछली पालन के लिए आकर्षित हो जाएंगे और तद्द्वारा उनकी आजीविका का स्तर बढ़ जाएगा।

संयुक्त निदेशक, तमिल नाडु मात्स्यिकी विभाग महा चिंगट सग्रहण मछुआरे को देते हुए

(टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

गुजरात में टी एस पी के अंदर खुला सागर मछली पालन का विस्तार

लगातार चार वर्षों से लेकर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने वेरावल में आदिवासी उप योजना के अंदर गुजरात के सिदी आदिवासियों के हितार्थ खुला सागर पिंजरा मछली पालन किया। पिछले तीन वर्षों के पालन परीक्षणों की सफलता से प्रेरणा पाकर चालू वर्ष में भी पिंजरा मछली पालन करने के लिए आगे आए। इस वर्ष की प्राथमिकता महा चिंगटों के पालन से समुद्री शैवालों और शुक्तियों के साथ महा चिंगटों को एकीकृत करते हुए पालन करना होगी। इन पालन परीक्षणों द्वारा आदिवासियों को आजीविका प्रदान करने के अतिरिक्त उसी क्षेत्र में पिंजरा मछली पालन में अभिरुचि होने वालों की निदर्शन कुशलता और क्षमता वर्धन में सहायक हो गया है। आदिवासियों के पंजीकृत संघ, भारत आदिमजुत मत्स्योद्योग मंडली, तलाला द्वारा चलाए जाने वाले इस कार्यक्रम से 22 परिवारों के करीब 110 सदस्य लाभ उठा रहे हैं।

(वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रशिक्षित प्रगतिशील मछुआरे द्वारा मछली पालन का प्रारंभ

कोवलम प्रगतिशील मछुआरा संघ (ए के पी एफ) के सहयोग से तमिल नाडु के कांचीपुरम जिले के कडलूर चिन्नकुप्पम गाँवों के युवा मछुआरे, जो सी एम एफ आर आइ समुद्री संवर्धन टीम से प्रशिक्षित है, ने समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों से पकड़े गए एशियन समुद्री बास मछली के उंगलि मीनों और *परास्ट्रोमाटिअस नीगर, लूटजानस* प्रजाति और *राचिसेन्ट्रोन कनाडम* के किशोरों का पिंजरे में पालन शुरू किया। गाँव के पास की संकरी खाड़ियों और पश्चजलों में छोटे और देशीय रूप से बनाए गए पिंजरा जाल स्थिर किए गए। इन में से एक पिंजरे से 13 नवंबर 2015 को मछली संग्रहण किया और 54 कि. ग्रा. समुद्री बास मछली (980 ग्राम का औसत भार) तथा पेर्लस्पोट और करंजिड जैसी अन्य मछलियाँ भी प्राप्त हईं। समुद्री बास और मैंग्रोव जैक मछलियों को एक गैमिंग रिसोर्ट को प्रति किलोग्राम के लिए 500/- रुपए की दर पर बेच दिया गया, जहाँ से इन्हें बिना किसी मर्त्यता के लगभग दो घंटों तक मीठा पानी वातावरण में बदल दिया गया। युवा मछुआरों के इस उद्यम से कुल 33,000 रुपए का राजस्व प्राप्त हुआ।

(मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

"अनुसंधान पुस्तकालयों में ई-संपदाओं का प्रभावकारी प्रबंधन" पर राष्ट्रीय कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ के पुस्तकालय एवं प्रलेखन केन्द्र ने 12-17 अक्तूबर 2015 के दौरान "अनुसंधान पुस्तकालयों में ई-संपदाओं का प्रभावकारी प्रबंधन" पर 6 दिवसों की राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी। डॉ. जे. लता, कुलपति, कोच्ची विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (के यु एस ए टी), कोच्ची ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। श्रीमती पी. गीता, प्रभारी अधिकारी, पुस्तकालय एवं प्रलेखन केन्द्र ने कार्यशाला का समन्वयन किया। पुस्तकालय कार्मिकों के क्षमता वर्धन कार्यक्रम होते हुए इस के द्वारा संस्थागत रिपोसिटरी विकसित करने में आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किए गए और इ-संपदाओं के प्रभावकारी प्रबंधन के लिए आधुनिक प्रोद्योगिकियों के निष्पादन पर अवगाह जगाया गया। कार्यक्रम का समापन समारोह 17 अक्तूबर 2015 को आयोजित किया गया।

डॉ. जे. लता, कुलपति, के यु एस ए टी कार्यशाला का उद्घाटन करती हुई

आइ एम टी ए से मछुआरा स्वयं सहायक संघों को लाभ

एन आइ सी आर ए के अंदर कोबिया के पिंजरा पालन के साथ समुद्री शैवाल *काप्पाफाइकस अल्वरेसी* को एकीकृत करते हुए मुनैकाड (पाक उपसागर) में मई 2015 महीने में की गयी एकीकृत बहु पौष्टिक जलकृषि (आइ एम टी ए) सफल रूप से पूरी की गयी। समुद्री शैवालों का 17 सितंबर और 5 नवंबर 2015 को आयोजित दो सफलतापूर्वक संग्रहण के बाद 27 नवंबर और 6 दिसंबर 2015 को पिंजरे में पालित कोबिया मछली का संग्रहण किया गया। लगभग 52 से 72 से. मी. की लंबाई और 1.4 से 3.5 कि. ग्रा. के भार वाले कुल 1,792 कि. ग्रा. कोबिया मछली का संग्रहण किया गया, और प्रति किलो ग्राम के लिए 270 रुपए का फार्म गेट मूल्य प्राप्त हुआ।

(मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

एरणाकुलम जिले में परंपरागत चिंगट किसानों द्वारा पिंजरा मछली पालन

केरल में, विशेषतः एरणाकुलम जिला के पश्चजल क्षेत्रों में पिंजरा मछली पालन का द्रुत विकास हो रहा है। जिला के परंपरागत चिंगट किसान लोग विद्यमान जल क्षेत्रों, जिन में सीमित मछली उत्पादन होता है और रोग होने की वजह से कम चिंगट पालन में अनिश्चितता भी है, का सही तरह उपयोग करने में उत्साहशील है। विभिन्न कारणों से खुले तालाबों में मछली पालन लाभप्रद न होने पर पिंजरे में मछली पालन एक बदल उपाय माना जाता है। वाइपीन द्वीप के नायरम्बलम के लोगों की आमदनी का मुख्य स्रोत खेती और मत्स्यन हैं और यहाँ विशेषतः गाँव के पूर्व एवं पश्चिम भागों में विशाल परंपरागत पोक्काली खेत और मछली तालाब मौजूद है। कोच्ची के कडमकुडी ग्राम पंचायत के पिषला द्वीप में भी पोक्काली के कई खेत हैं। इन दोनों स्थानों के किसान लोगों ने अपने

नायरम्बलम में स्थापित चतुष्कोणीय पिंजरे का दृश्य

स्थानों में 4 मी. x 4 मी. आकार के जी आइ पिंजरे सजाए। पिषला में समुद्री बास, पेर्लस्पोट और तिलापिया मछलियों से युक्त चार पिंजरे और नायरम्बलम में एक पिंजरा स्थापित किए गए और अब इनका परिचालन चालू है। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ किसानों को आवश्यक वैज्ञानिक सहायताएं प्रदान करते हैं

केरल में भागीदारी खुला सागर पिंजरा मछली पालन

फोर्ट कोच्ची पुलिन के पास खुले समुद्र में समुद्रीबास और कोबिया मछलियों के पालन के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा 23.11.2015 को 6 मी. के व्यास होने वाला जी आइ पिंजरा स्थापित किया गया। इम्मानुएल चर्च, बीच रोड के के एल सी ए यूनिट की सहकारिता से समुद्र तट से 2 किलोमीटर दूर 6 मी. की गहराई में 75 कि. ग्रा. भार के दो लंगर उपयुक्त करके पिंजरा स्थापित किया गया। पिंजरे में एशियन समुद्रीबास मछली के संततियों का संभरण किया गया और ग्रुप प्रति दिन पिंजरे का अनुरक्षण और मछलियों को आहार देने के लिए सहमत हुए। मुनम्बम में वर्ष 2009 में किए गए पिंजरा मछली पालन निदर्शन के बाद यह कोच्ची में खुला सागर पिंजरा मछली पालन का दूसरा परीक्षण है। पिंजरे की स्थापना से पहले दिनांक 11.11.2015 को इस के बारे में मछुआरों को अवगाह देने का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 100 लोगों ने भाग लिया। समुद्री संवर्धन प्रभाग के डॉ. इमेल्डा जोसफ, डॉ. षोजी जोसफ और डॉ. बोबी इग्नेशियस, प्रधान वैज्ञानिकों और श्री के. एम. वेणुगोपालन, तकनीकी अधिकारी ने पिंजरा मछली पालन पर क्लास चलाए और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा देश के विभिन्न स्थानों में की जाने वाली पिंजरा मछली पालन गतिविधियों पर वीडियो भी दिखाया गया।

फोर्ट कोच्ची में खुला सागर पिंजरे के जलायन का दृश्य

द्वीप जैवविविधता सर्वेक्षण

कारवार के देवगड द्वीप में दिसंबर 2015 में जलांदर सर्वेक्षण करके प्रवाल विविधता का मानचित्रण किया गया। द्वीप के चारों ओर के चट्टानी नितलस्थ भागों में प्रवालों के खंड देखे गए। तटीय क्षेत्रों में 5-12 मीटर की गहराई में मुख्यतः मृदु प्रवाल देखे गए। द्वीप में नाशोन्मुख वाइल्ड बनाना (क्लिफ बनाना, *एनसेटे सूपरबम*) सहित घनी वनस्पतियाँ थीं। सर्वेक्षण किए गए स्थानों में भारी मात्रा में अवसाद थे, जो द्वीप काली नदीमुख पर स्थित होने के कारण होगा। फिर भी, कठोर प्रवाल मुश्किल परिस्थितियों का सामना करते हुए देखे गए। द्वीप के उत्तर भाग में 6-9 मी. की गहराई में विप प्रवाल या मंकी टेल (*जनसेल्ला जनसिया*) प्रचुर मात्रा में देखे गए। सात वंश के कठोर प्रवाल दृश्यमान थे जो हैं *पोराइट्स, फेविया, कोसिनेरिया, टर्बिनेरिया, पारासयातस,*

देवगड द्वीप के मृदु प्रवाल एवं गोरगोनिड

सिफास्ट्रिया और *ट्यूबास्ट्रिया*। अंतरज्वारीय और 3 मीटर की गहराई तक के उथले जल क्षेत्रों में चट्टानी शुक्ति *साकोस्ट्रिया कुकुल्लेटा* और *सरगासम* प्रजाति और *पाडिना* प्रजाति जैसे समुद्री शैवाल भी खूब मात्रा में पाए जाते हैं। मृदु प्रवालों और गोरगोनिडों में जीवाणु जनित रोग नहीं देखे गए, बल्कि कठोर प्रवालों विशेषतः *पोराइट्स* समूह में जैव अपरदन देखा गया। फिर भी सामान्यतया मजबूत आवास व्यवस्था देखी गयी।

(डॉ. पी. लक्ष्मीलता, प्रधान अन्वेषक,एम बी/वी ए आइ/33, समुद्री जैवविविधता की रिपोर्ट)

महाराष्ट्र में कोष संपाशों में पावर ब्लॉक लगाने से सामाजिक संघर्ष

पिछले दशक के दौरान राज्य में बांगड़ा और तारलियों को लक्षित मत्स्यन के साथ कोष संपाशों की मात्स्यिकी गतिशील हो रही है। हाल के वर्षों के दौरान शिंगटी, काली पाम्फ्रेट जैसे वाणिज्यिक प्रमुख तलमज्जी मछलियों और घोल, कोथ आदि जैसे सयनिडों के अवतरण के साथ कोष संपाश मात्स्यिकी की पकड़ में विविधता लायी गयी है। वर्धित कोष संपाश मात्स्यिकी और इनके द्वारा भारी मात्रा में उप पकड़ (60-65%) और किशोर मछली पकड़ की समस्याओं की वजह से तटीय समुद्र में डोल जाल, गिल जाल और तट संपाशों का परिचालन करने वाले परंपरागत मछुआरों के बीच में संघर्ष का कारण बन गया। प्राकृतिक संपदाओं के टिकाऊपन और कोष संपाशों और परंपरागत मछुआरों के बीच बढ़ते हुए संघर्ष पर विचार करते हुए महाराष्ट्र सरकार ने इस समस्या का समाधान करने के उद्देश्य से वर्ष 2011 में कोष संपाश समिति गठित की है। अब महाराष्ट्र में कोष संपाश बेड़ाओं में 435 एकक मौजूद हैं। परंपरागत रूप से इन जालों को मानव शक्ति द्वारा खींचा जाता था, लेकिन हाल ही में जाल खींचने के लिए पावर ब्लोक (या बूम) लगाए गए। अलग इंजन (4 सिलिन्डर, 36 एच पी) से जगाने वाली हाइड्रोलिक पावर से इसका परिचालन किया जाता है और आवश्यकता के अनुसार पावर ब्लोक की गति और खींचने की दिशा में परिवर्तन किया जा सकता है। सासून डॉक में परिचालन किए जाने वाले करीब 50 कोष संपाशों में पावर ब्लॉक लगाए गए हैं, जिससे जाल खींचने का समय कम हो गया है और खींच और मछली पकड़ दुगुना किया जा सकता है। इस के अतिरिक्त पोत पर काम करने वालों की मानव शक्ति में भी घटती की गयी है, पहले पोत पर 20 से 25 कर्मी दल था, लेकिन अब यह संख्या 5 से 8 तक कम हो गयी। इस तरह के विकास परंपरागत मछुआरों और कोष संपाश परिचालकों और कर्मी दल और नाव मालिकों के बीच संघर्ष होने के लिए कारण बन गए हैं।

(आल्बर्ट आइडु, आइ. एस. होटागी, वीरेन्द्र वीर सिंह, वैरब डी. मात्रे, नीलेश ए. पवार पूनम ए. खंडागले, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

सासून डॉक, मुम्बई में हाइड्रोलिक पावर लगाए गए कोष संपाश एककों का दृश्य

तमिल नाडु के मत्स्यन गाँवों में असाधारण बाढ़ का असर

चेन्नई में नवंबर-दिसंबर 2015 के दौरान हुई लगातार बारिश से व्यापक नष्ट और विनाश हुए। तमिल नाडु के सात तटीय जिलाओं में 68 मत्स्यन गाँव "कठोर रूप से प्रभावित" और 169 गाँव बाढ़ से "मध्यम रूप से प्रभावित" थे। कांचीपुरम जिले में सबसे अधिक मत्स्यन गाँव (23) गंभीर रूप से प्रभावित हुए और इसके बाद कडलूर (12) में अधिक नाश हुआ। लगातार हुई भारी वर्षा से कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में भी हानि हुई। सेडिमेन्टेशन और रिसर्वोयर टैंकों के छत खराब हुए और बोर पाइप से आने वाले समुद्र जल की लवणता बहुत कम स्तर तक हो गयी, जिससे अंडशावकों, शैवाल संवर्धन और अन्य जीवों पर बुरा असर पड़ा।

(मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

पिंक विप रे मछली का भारी अवतरण

बेपुर में नाव पर परिचालित कांटा डोर द्वारा पिंक विप रे *हिमान्तूरा फाइ* मछली का भारी अवतरण हुआ और इन्हें 22 दिसंबर 2015 को कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय लाया गया। लगभग 18 टन रे मछली अवतरण का प्रति किलो ग्राम के लिए 74 रुपए की दर पर नीलाम कर दिया गया।

पिंक विप रे मछली के अवतरण का दृश्य

ब्लैक स्पोटड क्रॉकर की असाधारण बंपर पकड़

पाम्बन-तेर्कुवाडी अवतरण केन्द्र में 193 एच पी इंजन लगाए गए 16 मी. की समग्र लंबाई के मछली आनाय (*मीनमाडी*) के परिचालन द्वारा 9 दिसंबर, 2015 को ब्लैक स्पोटड क्रॉकर (*प्रोटोनीबा डयाकान्तस*), जिसे स्थानीय रूप से '*घोल / कूरल*' कहा जाता है, का भारी अवतरण हुआ। लगभग दो टन की कुल पकड़ में 47 मादा और 53 नर मछलियाँ मौजूद थीं जिनके लंबाई और भार क्रमशः 120 से. मी. और 19 कि. ग्रा. थे। कुल पकड़ को प्रति किलो ग्राम के लिए 1460/- रुपए की दर पर नीलाम कर दिया गया और केरल ले गया, क्योंकि केरल में घरेलू तथा निर्यात बाज़ार में बड़ी मांग होने वाले आइसिंग्लास बनाने के लिए इस मछली के स्विम ब्लैडर उपयुक्त किए जाते हैं। दक्षिण पूर्व तट पर इतने बड़े आकार वाली क्रॉकर मछली की उपस्थिति विरल है और इस से पहले इस तरह भारी मात्रा में इस मछली के अवतरण की रिपोर्ट नहीं की गयी है।

(रम्या एल., सूर्या एस., एम. राजकुमार, डॉ. एन. एस. जीना, रम्या अभिजित, ए गांधी, के. षण्मुखनाथन, आर. शेल्वकुमार, के. तंगवेल और डॉ. ए. के. अब्दुल नासर, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

सूत्रपख ब्रीम के किशोरों का भारी अवतरण

मुम्बम मत्स्यन पोताश्रय से नवंबर 2015 से लेकर बहुदिवसीय आनायकों के परिचालन द्वारा 50- 100 मि. मी. की लंबाई परास के सूत्रपख ब्रीम किशोर *नेमीट्टिस रनडाली* बडी मात्रा में पाए गए। ये अवतरण की गयी कुल सूत्रपख ब्रीम का 75-80% आंके गए। नवंबर महीने में 113 टन किशोर मछलियों का अवतरण किया गया, जो दिसंबर में भी जारी किया गया। पकड़ को अवतरण केन्द्र में ही प्रति किलोग्राम के लिए 20/- रुपए की दर में नीलाम कर दिया गया और *सुरिमी* नामक मछली कीमा, जो प्रमुख निर्यात वस्तु है, बनाने के लिए मांगलूर तक इनका परिवहन किया गया।

(तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

शूली महाचिंगट प्रजातियों का प्रग्रहण स्थिति में स्फुटन

मन्नार खाड़ी जैवमंडल आरक्षण में शूली महाचिंगटों की प्रमुख तीन प्रजातियाँ पायी गयीं, जो हैं *पानुलिरस होमारस होमारस, पी. वेर्सिकोलर* और *पी. ओर्नाटस* और इस क्षेत्र में इनका जीवित रूप में विपणन यहाँ की एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। इस प्रजाति के डिंभक वितरण और मात्स्यिकी में प्रवेश पर जानने और डिंभक की आण्विक पहचान विनिर्दिष्ट करने के लिए प्राकृतिक स्थानों से संग्रहित अंडयुक्त मादा *पानुलिरस वेर्सिकोलर* और *पी. होमारस* का प्रेरित अंडजनन कराया गया। अंडशावकों को जीवित महाचिंगट पालन केन्द्रों से संग्रहित करके 2 टन की धारिता के एफ आर पी टैंकों में इनका अनुरक्षण किया गया। अंड निषेचन के 1-2 हफ्तों में अंडजनन हुआ और *पी. होमारस* और *पी. वेर्सिकोलर* के एकल अंडशावकों से क्रमशः 1.9 लाख और 3 लाख फिल्लोसोमा डिंभक बाहर आए। प्राकृतिक रूप से पकड़े गए फिल्लोसोमा की प्रजाति पहचान बहुत कठिन कार्य है और तुलनात्मक संदर्भ डेटा जगाने के लिए यह कार्य अत्यंत उपयोगी होगा।

(जीना, एन. एस., टिन्टो तोमस, अब्दुल नासर, ए. के. और राममूर्ती, एन.,मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

लाम्बिस लाम्बिस में दो ओपरकुलम की असाधारण उपस्थिति

जठरपाद संपदाओं के नियमित निगरानी के दौरान 24 अगस्त 2015 को पनडुब्बों द्वारा कलावासल के दो नॉटिकल मील की दूरी और 5 मी. की गहराई से संग्रहित *लाम्बिस लाम्बिस* (लिनेअस, 1758) के 195 मि. मी. और 325 ग्राम के आकार के एक नमूने में दो ओपरकुलम पाए गए। कई बार विपथन की रिपोर्ट प्राप्त हुई है, लेकिन दो ओपरकुलम की उपस्थिति असाधारण घट ना है और जठरपादों में पहली बार यह देखा जाता है। इस जीव को टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र के संग्रहालय में रखा गया

(एम. कविता, डॉ. आइ. जगदीश, जे. पद्मनाथन और एच. शिवनेश, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

दो ओपरकुलम सहित लाम्बिस लाम्बिस का दृश्य

द्विकपाटियों के भंडारण के लिए देशी तकनीक

महाराष्ट्र के विभिन्न संकरी खाड़ियों से द्विकपाटी, जिसे स्थानीय रूप से *तिसरे* या *शैवाले*, *तिगारी* या *शिंपाले* कहा जाता है, का वाणिज्यिक तौर पर विदोहन किया जाता है। रत्नगिरी जिले के कल्बादेवी क्रीक प्रमुख द्विकपाटी संग्रहण केन्द्र है। स्थानीय मछुआरों द्वारा निम्न ज्वार के दौरान सीपियों का हाथ से संग्रहण किया जाता है और साधारणतया अमावस्या और पूर्णिमा के दिनों में, जब ये पूरी तरह बाहर दिखते हैं, इनका अधिकांश संग्रहण किया जाता है। मछुआरे प्रति दिन उपलब्धता के अनुसार 80-100 कि. ग्रा. द्विकपाटियों का संग्रहण करते हैं। स्थानीय मछुआरों की राय में इस तरह की श्रृंग पकड़ मांचसे दस वर्षों में होती है और पिछली बार वर्ष 2010 - 11 के दौरान श्रृंग पकड़ हुई थी। संग्रहित सीपियों को स्थानीय मछुआरे विशेष तरीके से जीवित स्थिति में भंडारण करते हैं। संग्रहित 50-60 कि.ग्रा. सीपियों को पोलिथीन थैलियों में संकरी खाड़ी में ही डुबाकर रखते हैं। पोलिथीन थैलियों को ऊपर से रस्सी से बांध दिया जाता है और पहचान करने के लिए संकेत का झंडा लगाया जाता है। जब स्थानीय बाजार में द्विकपाटियों की मांग बढ़ती है, तब इन्हें बाहर लेकर बेचा जाता है। कल्बादेवी संकरी खाड़ी में सीपी संग्रहण में लगभग 100-200 मछुआरे लगे हुए हैं और यह इनकी आजीविका का उपाय भी है। फिर भी, इस सीपी संपदा का टिकाऊपन कायम रखने के लिए इनका न्यायसंगत विदोहन और परिरक्षण किया जाना आवश्यक है।

कल्बादेवी संकरी खाड़ी में सीपी संग्रहण का दृश्य

(सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

भारत के उत्तर-पूर्व तट पर *लूटजानस अर्जेन्टिमाकुलेटस* में गोणोकोरिसम की पुष्टि

विशाखपट्टणम से प्राकृतिक रूप से पकड़ी गयी *लूटजानस अर्जेन्टिमाकुलेटस* में गोणोकोरिसम या मछलियों में अलग अलग नर और मादा की उपस्थिति की पुष्टि की गयी। दोनों मादा और नर मछली नमूने 55-60 से. मी. के वर्ग (परिपक्व होने वाली स्थिति) और 70-75 से. मी. के बडे आकार के रेंच (अंडजनन के लिए तैयार) में देखीय गयी। इन नमूनों से संग्रहित टेस्टिकुलार और ओवेरियन नमूनों के हिस्टोलजिकल तैयारी से इस बात की और भी पुष्टि की गयी।

(विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

समुद्री मछली के पेट में प्लास्टिक का अंतर्ग्रहण

तिरुवैकुलम में 30 नवंबर 2015 को परिचालन किए गए *मुरेलवला* (बेलोनिडों को लक्षित गिल जाल) द्वारा अवतरण किए गए करंजिड मछली *कोरिफीना इक्विसेलिस* के पेट में लगभग 10.5 से. मी. की लंबाई और 6 से. मी. की चौड़ायी होने वाले प्लास्टिक का टुकड़ा देखा गया। इसके अतिरिक्त पेट खाली था। सामान्यतः यह मांसाहारी मछली है, जो बड़ी मछली छोटी मछलियों और स्क्विड को खाती है।

(एम. शिवदास, के. सुरेश कुमार और के. कण्णन, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मछली के टूटे गए पेट से प्लास्टिक के टुकड़े का दृश्य

प्रवासी पक्षियों की असाधारण दृश्यमानता

भारत के समुद्री पक्षियों पर बहुत कम सूचनाएं उपलब्ध हैं, इस परिदृश्य में *एफ आर वी सिल्वर पोम्पानो* में समुद्री पर्यटन करते वक्त नियमित निरीक्षण करते हुए संस्थान ने समुद्री पक्षी-मात्स्यिकी के आपसी संबंध पर अध्ययन शुरू किया। भारत का सबसे बडी सीगल प्रजाति प्रवासी समुद्री पक्षी पल्लासस गल या ग्रेट ब्लैक हेडड गल *लारस इक्तिएटस* है। साधारणतया सर्दी के मौसम में नवंबर / दिसंबर की शुरुआत में ये केरल तट पर आते हैं और अप्रैल / मई के दौरान वापस जाते हैं। असाधारण रूप से 16 अक्तूबर 2015 को कोच्ची में पल्लासस गल के छः किशोरों को देखा गया (10^0N 03'E; 76^0E)। केरल में विरल रूप से पाए

मास्क्ड बूबी

पल्लासस गल

जाने वाले समुद्री पक्षी मास्क्ड बूबी *सुला डक्टाइलेट्रा* की सबसे पहली उपस्थिति कण्णूर में विश्व विख्यात पक्षी विज्ञानी डॉ. सलिम अली ने वर्ष 1983 में रिपोर्ट की है। पहले जून से अगस्त तक के महीनों के दौरान इन्हें देखे जाते थे, लेकिन हाल ही में कोच्ची में इन्हें 9.11.2014 और 8.9.2015 को देखा गया, जो प्रवास अवधि में हुआ परिवर्तन की वजह से होगा। सितंबर 2015 के दौरान वातावरण का तापमान 27-29^{0}C के बीच में था, लेकिन समुद्री सतह का तापमान 28-29^{0}C था।

(आर. जयभास्करन, एस. लावण्या, पी. वैशाखन, सेबान जो, जिष्णु मोहन, डी. प्रेमा और वी. कृपा, एफ ई एम डी की रिपोर्ट)

प्रशिक्षण / विस्तार

शुक्ति पालन पर निदर्शन एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण

महाराष्ट्र के सिन्धुदुर्ग जिला के तारामुम्बारी, वेंगुर्ला और देवबाघ क्षेत्रों के स्वयं सहायक संघों को शुक्ति पालन का प्रचार करने के उद्देश्य से यू एन डी पी/ जी ई एफ की वित्त पोषित परियोजना "महाराष्ट्र राज्य के सिन्धुदुर्ग जिला में द्विकपाटी पालन का निदर्शन" के अंदर प्रशिक्षण दिया गया। भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ की तकनीकी सहायता से सिन्धुदुर्ग जिला के वडातार में शुक्तियों का पालन और संग्रहण सफल रूप से किया गया और इस उद्यम की ओर महिला स्वयं सहायक संघों के सदस्य अत्यंत आकर्षित हो गए। हर एक क्षेत्र में आयोजित प्रशिक्षण में कुल 200 सदस्यों ने भाग लिया। वीडियो प्रदर्शन और शुक्ति पालन के लिए आवश्यक रेन और रैक के निर्माण में सभी सदस्यों को सम्मिलित कराते हुए व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। मुख्यालय के डॉ. विद्या, श्री पी. एस. अलोशियस और श्री के. एम. जस्टिन जोय द्वारा प्रशिक्षण चलाया गया।

(मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

प्रशिक्षणार्थी शुक्ति पालन के लिए रेन बनाने का दृश्य

अलंकारी मछली संतति उत्पादन पर प्रशिक्षण

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में मन्नार खाड़ी जैवमंडल आरक्षण न्यास (जी ओ एम बी आर टी) द्वारा वित्त पोषित परियोजना के अंदर 28 से 30 अक्तूबर 2015 के दौरान 'चुनी गयी अलंकारी मछलियों का संतति उत्पादन' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ओलैकुडा, वडकाडु, तंगच्चिमडम, मंडपम, वेदालै और पिल्लैमडम गाँवों से कुल सैंतालीस मछुआरों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ. टी. एस. डांगे, आइ एफ एस, निदेशक, जी ओ एम बी आर टी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। क्लाउन मछलियों के अंडशावक विकास, प्रजनन, डिंभक एवं किशोरों का पालन, पालन तकनीक, जीवित चारा मछली पालन, जीवित खाद्य संवर्धन, पानी की गुणता और रोग प्रबंधन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

स्फुटनशाला में व्यावहारिक सत्र

जी आइ पिंजरा निर्माण पर व्यावहारिक सत्र

कडसनेंताल, मदुरै के मीठा पानी अलंकारी मछली पालन स्थान पर प्रशिक्षणार्थियों का मुआइना

आफ्रिका के प्रतिनिधियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

निदेशक आफ्रिका के प्रतिनिधियों के साथ आपसी विनियम करते हुए

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (एन ए ए आर एम) द्वारा आयोजित यु एस-भारत-आफ्रिका त्रिकाणीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंदर केनिया और लैबीरिया देशों के प्रतिनिधियों ने 10 अगस्त 2015 को संस्थान का मुआइना किया। कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (ए टी आइ सी), परियोजना अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन (पी एम ई) सेल एवं समुद्री संवर्धन प्रभाग द्वारा आगंतुकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया गया और आगंतुकों ने वैज्ञानिकों के साथ आपसी विनियम सत्र में भाग लिया और प्रयोगशालाओं और पनम्बुकाड, कोच्ची के खारा पानी पिंजरा मछली पालन गतिविधियों का मुआइना किया।

खुला सागर पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण

- मात्स्यिकी विभाग, केरल सरकार के कार्मिकों के लिए कारवार अनुसंधान केन्द्र द्वारा 1 से 7 दिसंबर 2015 के दौरान खुला सागर पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- राज्य मात्स्यिकी विभाग, केरल के कार्मिकों के लिए मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 5 से 11 दिसंबर 2015 के दौरान "पिंजरा मछली पालन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों के लिए समुद्री पिंजरा स्थान, समुद्री शैवाल प्रसंस्करण एकक, मानामदुरै और समुद्री एवं मीठा पानी अलंकारी मछली पालन एककों में मुआइना करने का अवसर प्रदान किया गया।

पिंजरा मछली पालन में औद्योगिक कार्य अनुभव कार्यक्रम

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र महाराष्ट्र के रत्नगिरी के डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ के मात्स्यिकी डिप्लोमा के छात्रों के लिए लगातार तीसरा वर्ष औद्योगिक कार्य अनुभव कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। इसके अंदर चार महीनों (17 दिसंबर 2015 से 30 अप्रैल 2016 तक) के दौरान छात्रों को पिंजरा की ढ़ांचा एवं निर्माण, लंगर, पिंजरे का जलायन, मछली संतति संग्रहण, परिवहन के इंजिनीयरिंग पहलुओं पर ज़ोर देते हुए समुद्री पिंजरा मछली पालन एवं प्रबंधन पर आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा।

डिप्लोमा छात्रों द्वारा पिंजरा जाल सजाने का दृश्य

(वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में आपसी विनियम बैठक

सीएम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 30 नवंबर 2015 को मात्स्यिकी आयुक्तालय, गुजरात सरकार और सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र संयुक्त रूप से गुजरात राज्य के विकास एजेन्सियों और अनुसंधान संस्थानों के बीच आपसी विनियम बैठक आयोजित की गयी। श्री एम. ए. नर्मावाला, आइ ए एस, मात्स्यिकी आयुक्त, गुजरात सरकार बैठक में अध्यक्ष रहे। भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प- सी आइ एफ टी, मात्स्यिकी कॉलेज, वेरावल, मात्स्यिकी विभाग, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास एजेन्सी (एम पी ई डी ए), एम पी ई डी ए-एम ई टी एफ आइ एस एच और निर्यात निरीक्षण एजेन्सी (ई आइ ए) के वैज्ञानिकों और विकास अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया। विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने गुजरात सेक्टर के समुद्री मात्स्यिकी विभाग के विकास में की जाने वाली गतिविधियों और निभायी जाने वाली भूमिका के बारे में प्रस्तुतीकरण किया। बाद में मात्स्यिकी आयुक्त ने केन्द्र की प्रयोगशाला और समुद्री पिंजरा स्थानों का निरीक्षण किया।

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र की जीववैज्ञानिक प्रयोगशाला में प्रतिनिधि गण

प्रदर्शनियाँ

भाकृ अनु प- सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने 13 से 15 अक्तूबर 2015 के दौरान काल्डवेल स्कूल, तूत्तुकुडी में मन्नार खाड़ी जैवमंडल आरक्षण न्यास (जी ओ एम बी आर टी) द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। मन्नार खाड़ी के समुद्री आवास तंत्र और मात्स्यिकी संपदाओं के बारे में बच्चों में अवगाह जगाना प्रदर्शनी का प्राथमिक उद्देश्य था। प्रदर्शनी से सारे दिन आए गए बच्चों में समुद्री आवास तंत्र स्वास्थ्य पूर्वक और टिकाऊ परिरक्षण कैसे करेंगे, इस बात पर संदेश पहुँचाया सका।

कोच्ची में 1 और 2 दिसंबर 2015 को आयोजित फ्रेन्ड्स फेस्ट-2015 प्रदर्शनी के दौरान एरणाकुलम जिलाधीश श्री एम. जी. राजमाणिक्यम भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ स्टाल का मुआइना करते हुए

- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान केन्द्र का टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने 26-27 सितंबर 2015 के दौरान **तमिल विकास एवं सूचना विभाग** द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रदर्शनी में चौथी बार भाग लियाय।

- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची, मात्स्यिकी कॉलेज, पनंगाड के अलुमिनी असोसिएशन और केरला अक्वा फार्मेर्स फेडरेशन द्वारा संयुक्त रूप से भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ में 17 और 18 अक्तूबर 2015 को केरल मछुआरा क्षमता वर्धन मेला - 2015 का आयोजन किया गया। डॉ. श्याम एस. सलिम, डॉ. विपिनकुमार वी. पी. और डॉ. ग्रिनसन जोर्ज ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र में खारा पानी पिंजरों में एशियन समुद्रीबास मछली पालन का प्रारंभ

समुद्री संवर्धन पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना के अंदर कारवार के पास हल्गा में चुने गए खारा पानी क्षेत्रों में पिंजरों में एशियन समुद्रीबास मछली का पालन शुरू किया गया। इस के अंदर समुद्रीबास मछली के लगभग 1500 किशोरों का संभरण किए गए 6 मी x 4 मी x 4 मी के व्यास के 6 जी आइ पिंजरे लगाए गए और कारवार अनुसंधान केन्द्र के मार्गदर्शन में मछुआरा स्वयं सहायक संघों द्वारा पिंजरे का अनुरक्षण किया जा रहा है।

प्रतिनिधि / आगंतुक

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में विश्व बैंक का टीम

रामनाथपुरम जिले में वर्ष 2006 से लेकर कार्यान्वित की जाने वाली तमिल नाडु पुतु वाषु परियोजना से सिलसिले में रामनाथपुरम जिलाधीश के कार्यालय में 4 नवंबर 2015 को विश्व बैंक टीम ने विभिन्न सरकारी संगठनों के साथ चर्चा की। इस परियोजना का नाम सितंबर 2016 से लेकर तमिल नाडु ग्रामीण परिवर्तन परियोजना (टी एन आर टी पी) के रूप में परिवर्तित किया जाएगा। इस बैठक में जिलाधीश अध्यक्ष रहे। डॉ. आर. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने बैठक में भाग लिया और चर्चाओं के आधार पर मछुआरों की आजीविका के बदल उपाय और उद्यमिता विकास कार्यक्रम के रूप में पिंजरा मछली पालन कार्यविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए रामनाथपुरम जिले को चुन लेने का निर्णय लिया गया। बाद में जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ विश्व बैंक टीम ने मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया और केन्द्र की विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों के बारे में विवरण दिया गया। टीम ने मरक्कयारपट्टिणम के समुद्री पिंजरा स्थान का भी मुआइना किया।

(मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ विश्व बैंक टीम पिंजरा मछली पालन स्थान का मुआइना करते हुए

- भारतीय प्रतिनिधियों के नोर्वे में मुआइना के सिलसिले में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ ने सुश्री एलिसाबेत एस्पाकर, मात्स्यिकी मंत्री, टोन्धीम के साथ 19 अगस्त, 2015 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- डॉ. टी. प्रभु शंकर, आइ ए एस, सहायक सचिव, डेयर-भा कृ अनु प ने 17 अक्तूबर, 2015 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में मुआइना किया।

पुरस्कार

आइ आइ एस एफ विज्ञान फिल्म पुरस्कार

शुक्ति पालन पर बनायी गयी फिल्म को 4-5 दिसंबर 2015 के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली में आयोजित इंडिया इन्टरनेशनल सयन्स फिल्म फेस्टिवेल 2015 में आइ आइ एस एफ विज्ञान फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। एन ए आइ पी निधि उपयुक्त करके सी एम एफ आर आइ द्वारा फिल्म का निर्माण किया और यह यूट्यूब पर देखा जा सकता है (http://www.youtube.com/watch?v=amUE_R2kFx8)

- डॉ. संध्या सुकुमारन को नई दिल्ली में 19 दिसंबर, 2015 को आयोजित कार्यक्रम में डॉ. रिचार्ड मिडलेटन, कोमनवेल्थ स्कोलरशिप कमीशन का मुख्य एवं टी एंड एफ प्रतिनिधि से टेयलर एंड फ्रान्सिस कोमनवेल्थ उत्कृष्ट पत्रिका लेख पुरस्कार प्राप्त हुआ।

- श्री सुरेश कुमार मोज्जादा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र को डॉ. (श्रीमती) इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मार्गदर्शन में किए गए "खुला सागर पिंजरा मछली पालन में प्रौद्योगिकीय एवं जीवविज्ञानीय नवोन्मेष" शीर्षक के थिसीस के लिए मांगलूर विश्वविद्यालय द्वारा पी एच. डी प्रदान की गयी।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ जर्नल क्लब ने "अदृश्य, भ्रामक, अद्भुद, रहस्यमय और अतुल्य निमटोड्स" विषय पर भाषण आयोजित किया। विख्यात प्रोफसर मोहम्मद शमीम जयराजपुरी, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय प्राणिविज्ञान सर्वेक्षण एवं स्थापक निदेशक, कृषि संस्थान ने भाषण दिया। कार्यक्रम में 100 से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में 26-31 अक्तूबर, 2015 के दौरान सतर्कता अवगाह सप्ताह मनाया गया।

विश्व खाद्य दिवस समारोह

विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर 16 अक्तूबर 2015 को केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र ने तूत्तुकुडी के सिप्पिकुलम गाँव में कोबिया मछली के लिए समुद्री पिंजरा एकक स्थापित किया। तूत्तुकुडी जिला में कोबिया मछली का पालन खुला सागर पिंजरे में करने का यह सबसे पहला ग्रुप है। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र के श्री सी. कालिदास, श्री एल. रंजित, सुश्री एम. कविता, डॉ. आइ. जगदीश और डॉ. पी. पी. मनोजकुमार ने पिंजरा मछली पालन के लिए तूत्तुकुडी जिला के मनप्पाड से वेम्बार तक विभिन्न स्थानों का सर्वेक्षण किया और अंत में सिप्पिकुलम गाँव का चयन किया। मंडपम और रामेश्वरम में समुद्री मछलियों के पिंजरा पालन में हुई सफलता से प्रोत्साहित होकर सिप्पिकुलम के मछुआरों ने समुद्री पिंजरा मछली पालन में तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता के लिए टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र से अनुरोध किया। सिप्पिकुलम के चुने गए स्थानों में विशेष प्रकार रूपाइत दो जी आइ पिंजरा जाल स्थापित किए गए, जिनमें कोबिया मछली के लगभग 15 ग्रा. भार वाले 1500 उंगलिमीनों को संभरित किया गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने इस क्षेत्र के पिंजरा मछली पालन में अभिरुचि होने वाले मछुआरा ग्रुपों के लिए आवश्यक तकनीकी सहायता देने का वादा किया और व्यक्त किया कि भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा वर्ष 2017 तक लक्षित 1000 पिंजरों में से अब तक 342 पिंजरों की स्थापना की गयी है। श्री आइसक जयकुमार, मात्स्यिकी सहायक निदेशक (मात्स्यिकी), तमिल नाडु ने पिंजरे में पखमछलियों और कवच मछलियों के पालन के लिए उपलब्ध विभिन्न वित्तीय सहायताओं के बारे में सूचित किया। इस अवसर पर स्फुटनशाला में पालन की गयी *सेपियोट्यूथिस लेस्सोनियाना* और *सेपिया फ्रोनिस* के किशोरों को वायु मिश्रित समुद्र जल हाने वाली पोलिथीन थैलियों में पैक करके समुद्र रैंचन करने हेतु सिप्पिकुलम और त्रेसपुरम के मछुआरों को प्रदान किया गया। तमिल नाडु के तूत्तुकुडी जिले के मात्स्यिकी सहायक निदेशकों द्वारा कार्यक्रम का अभिनंदन किया गया। मीडिया द्वारा भी कार्यक्रम का व्यापक तौर पर प्रचार किया गया। इस अवसर पर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं, विकसित प्रौद्योगिकियों और अनुसंधान के आगामी महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर तैयार की गयी पुस्तिका (अंग्रेजी और तमिल) का विमोचन किया गया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक तूत्तुकुडी में समुद्री पिंजरा मछली पालन कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन करने का दृश्य

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र पर पुस्तिका का विमोचन

स्वच्छ भारत

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र के कर्मचारियों ने 4 अक्तूबर 2015 को वेर्सोवा में कार्यालय मकान और कार्यालय परिसर की सफाई करते हुए राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान में भाग लिया और विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र के कर्मचारियों ने 25 सितंबर से 11 अक्तूबर 2015 तक इस अभियान में भाग लिया। स्वच्छ भारत अभियान के कार्यान्वयन के भाग के रूप में सभी कर्मचारियों ने स्वच्छता कार्यविधियों में भाग लिया। मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 25 सितंबर से 11 अक्तूबर 2015 तक स्वच्छता अभियान का कार्यान्वयन किया गया और कार्यालय परिसर एवं मांगलूर मात्स्यिकी पोताश्रय सहित आसपास के स्थानों की सफाई की गयी। मद्रास अनुसंधान केन्द्र और कोवलम क्षेत्र केन्द्र, चेन्नई में 16 अक्तूबर से 1 दिसंबर 2015 तक आयोजित विशेष स्वच्छता अभियान के दौरान कार्यालय तथा आसपास के परिसर की सफाई की गयी।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में स्वच्छ भारत कार्यविधियों का दृश्य

मांगलूर मात्स्यिकी पोताश्रय में सफाई कार्यों का दृश्य

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में मंगलवार को साप्ताहिक स्वच्छता अभियान का दृश्य

राजभाषा कार्यान्वयन

हिन्दी कार्यशाला

- सी एम एफ आर आइ मुख्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 11 दिसंबर 2015 को एक दिवसीय 'बोलचाल की हिन्दी' कार्यशाला आयोजित की गयी। श्री रमेश प्रभु, मुख्य राजभाषा अनुवादक, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटड, कोच्ची ने क्लास चलाया।

- चेन्नई अनुसंधान केन्द्र में 21 दिसंबर, 2015 को हिन्दी में प्रशासनिक और वैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग वर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसमें 30 कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण

श्रीमती धन्या एम. बी. और श्रीमती ज़ुलेखा एम., (आशुलिपिक ग्रेड ।।।) ने हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कोच्ची में दिनांक 05-09 अक्तूबर 2015 के दौरान आयोजित 5 दिवसीय हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण में भाग लियाय।

अखिल भारतीय हिन्दी संगोष्ठियों में सहभागिता

श्रीमती ई. के. उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी अनुवादक) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और कृषि ज्ञान प्रबंधन निदेशालय द्वारा 07 नवंबर 2015 को एन ए एस सी समुच्चय, नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी संगोष्ठी में भाग लिया।

श्रीमती वन्दना वी., तकनीकी सहायक (हिन्दी अनुवादक) ने नौसेना भौतिक एवं महासागरीय प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्ची में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी संगोष्ठी में भाग लिया।

कॉलेज के छात्रों के लिए राजभाषा पर अवगाहः सेन्ट पॉल्स कॉलेज, कलमशेरी के छात्रों और अध्यापकों के लिए 19 दिसंबर 2015 को केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी की प्रधानता, यूनिकोड का प्रयोग, अनुसंधान गतिविधियों में हिन्दी आदि विषयों पर अवगाह जगाया गया।

विश्व मृदा दिवस समारोह

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा 5 दिसंबर 2015 को पल्लिपुरम सेवा सहकारी बैंक में आयोजित कार्यक्रम में विश्व मृदा दिवस मनाया गया। इस दौरान माननीय सांसद प्रोफसर के. वी. तामस ने मछुआरों को सोइल हेल्थ कार्ड प्रदान किए। श्री एस. शर्मा, एम एल ए ने न्यट्रीस्लरी का लांचिंग किया और मोबाइल बिक्री काउन्टर का उद्घाटन किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ ने मृदा संग्रहण तकनीक पर फॉल्डर का विमोचन किया। उप अध्यक्ष, पल्लिपुरम ग्राम पंचायत, अध्यक्ष, पल्लिपुरम सेवा सहकारी बैंक, सहायक निदेशक (कृषि) नारक्कल, कृषि अधिकारी, पल्लिपुरम ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कुल 250 किसानों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

सोइल हेल्थ कार्ड का वितरण

मछुआरा विकास एजेन्सी (एफ एफ डी ए) पिंजरा जलकृषि कार्यक्रम के लिए तकनीकी सहायता

कृषि विज्ञान केन्द्र ने एरणाकुलम जिला के जल कृषि स्वयं सहायक ग्रुप के सहभागियों के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। डॉ. पी. ए. विकास ने 19 दिसंबर 2015 को एफ एफ डी ए एरणाकुलम में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।

मोबाइल बिक्री काउन्टर का उद्घाटन

ए टी एम ए प्रौद्योगिकी मेला

कृषि विज्ञान केन्द्र ने मुवाट्टुपुषा में 10 और 11 दिसंबर 2015 को आयोजित प्रौद्योगिकी मेला में भाग लिया। इस दौरान कृ वि केन्द्र के जैव कृषि उत्पाद प्रदर्शित किए और लोगों को बेच दिए गए।

पिंजरा जलकृषि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

जैव कृषि उत्पादों का प्रदर्शन

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन,** निदेशक ने सी एम एफ आर आइ विषिजम अनुसंधान केन्द्र में 14 अक्तूबर 2015 को ए आइ एन पी समुद्री संवर्धन पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
  भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र द्वारा 16 अक्तूबर, 2015 को आयोजित विश्व खाद्य दिवस समारोह में भाग लिया।
  मुसाफ़रनगर में मछली पालन गतिविधियों के विकास के संबंध में 21 अक्तूबर 2015 को डॉ. संजीव कुमार बाल्यान, राज्य कृषि मंत्री और डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।
  अलंकारी मछली पालन पर कलूर, एरणाकुलम में 3 दिसंबर, 2015 को आयोजित ए डब्लियु एफ/ ओ एल प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।
  के वी के - सी एम एफ आर आइ और पल्लिपुरम कृषि भवन के संयुक्त सहकारिता से 5 दिसंबर 2015 को आयोजित विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस समारोह में भाग लिया।
  के आइ आइ टी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में 7 दिसंबर 2015 को आयोजित एन ए एस आइ के 85 वां वार्षिक सत्र के दौरान "समुद्री एवं मीठा पानी पारितंत्रः राष्ट्रीय विकास में भूमिका" पर आयोजित परिचर्चा में भाग लिया।
  एम पी ई डी ए, कोच्ची में 11 दिसंबर 2015 को आयोजित राजीव गांधी जलकृषि केन्द्र (आर जी सी ए) की 29वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।
  कोच्ची में 16 दिसंबर 2015 को आयोजित एम एस एस आर एफ-मछुआरा अनुकूल मोबाइल एप्लिकेशन पर गुणभोक्ताओं की उच्च स्तरीय बैठक में भाग लिया।
  तिरुवनंतपुरम में 18 दिसंबर 2015 को केरल के मुख्य मंत्री श्री उम्मन चान्डी के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया और राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति के रूपायन के लिए उठाए गए कदमों पर विवरण दिया।
  राष्ट्रीय समुद्री मात्स्यिकी नीति पर चर्चा करने हेतु 24 दिसंबर 2015 को डॉ. एस. अय्यप्पन, महा निदेशक, भा कृ अनु प एवं सचिव (डेयर), संयुक्त सचिव (मात्स्यिकी) और सहायक महा निदेशक (समुद्री मात्स्यिकी) के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी. यु. ज़क्करिया,** अध्यक्ष, डी एफ डी ने 'अच्छे शासन के उपाय के रूप में निवारक सतर्कता' विषय पर एन ए एस सी, दिल्ली में 28 अक्तूबर 2015 को आयोजित भा कृ अनु प संस्थानों के सतर्कता अधिकारियों की कार्यशाला में भाग लिया।
  मराइन स्टिवार्डशिप काउन्सिल द्वारा 8 दिसंबर 2015 को ताज गेटवे होटल, कोच्ची में आयोजित मिश्रित प्रजाति मात्स्यिकी कार्यशाला में भाग लिया और भारत की आनाय मात्स्यिकी पर प्रस्तुतीकरण किया।
  गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर में 16 नवंबर 2015 को आयोजित दक्षिण राज्यों के सतर्कता अधिकारियों की पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
  आइ यु यु मत्स्यन पर ई सी नियमन पर 20 नवंबर 2015 को होटल क्राउन प्लासा, कोच्ची में आयोजित यूरोपियन मिशन की बैठक में भाग लिया और आइ यु यु मत्स्यन के नियंत्रण के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पहल पर प्रस्तुतीकरण किया।
  आइ यु यु मत्स्यन पर यूरोपियन मिशन की 23 नवंबर 2015 को उद्योग भवन, नई दिल्ली में आयोजित अनुवर्ती बैठक में भाग लिया।
  आवास तंत्र के परिदृश्य में टिकाऊ मात्स्यिकी विषय पर 10 दिसंबर 2015 को सेन्ट माइकिल्स कॉलेज, चेर्तला, केरल में आयोजित यू जी सी द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित भाषण दिया।
  महा निदेशक, भा कृ अनु प के निर्देश पर समुद्री मात्स्यिकी नीति निर्माण के संबंध में 18 दिसंबर 2015 को ट्रिवान्ड्रम में केरल के मुख्य मंत्री के साथ बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. के. एस. मोहम्मद,** अध्यक्ष, एम एफ डी ने कोच्ची में 8-10 अक्तूबर 2015 को आयोजित मराइन स्टिवार्डशिप काउन्सिल (एम एस सी, लंदन) की 25वीं तकनीकी सलाहकार बोर्ड (टी ए बी) बैठक में भाग लिया।
  डब्लियु डब्लियु एफ ग्लोबल फिशरीस कार्यक्रम, हामबर्ग, जर्मनी द्वारा 18 नवंबर 2015 को "हिन्द महासागर ट्यूना मामले - भारतीय परिदृश्य" विषय पर प्रायोजित कार्यशाला में आमंत्रित विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।
  केरला यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीस एवं आशियन स्टडीस (के यु एफ ओ एस), पनंगाड, कोच्ची में 20 नवंबर 2015 को आयोजित "विश्व मात्स्यिकी दिवस समारोह" में भाग लिया।
  केरल मछुआरा कल्याण बोर्ड द्वारा 21 नवंबर 2015 को कोच्ची में "मात्स्यिकी सेक्टर के मछुआरों में अवगाह जगाना" विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
  कोल्लम जिलाधीश के कार्यालय में 30 दिसंबर 2015 को आयोजित सीपी परिषद बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने 15 अक्तूबर 2015 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय तटीय मेखला प्रबंधन प्राधिकरण (एन सी इज़ेड एम ए) की 29वीं बैठक में भाग लिया।
  केन्द्र सरकार कर्मचारी आवास, मालवानी में 17 अक्तूबर 2015 को केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कार्मिकों के साथ बैठक।
  भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई में 15 नवंबर, 2015 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, प्रभारी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई और डॉ. अनिल चौबे, प्रभारी, सी एस आइ आर-एन आइ ओ, मुम्बई के साथ दीर्घकालीन एकीकरण एवं सहयोग डयलोगः तौर- तरीका का अंतिम रूप देने की प्राथमिक बैठक में भाग लिया।
  वेर्सोवा, मुम्बई में 15 दिसंबर, 2015 को केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के बोर्ड ऑफ स्टडीस, मात्स्यिकी अर्थशास्त्र, विस्तार एवं साख्यिकी प्रभाग की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. लक्ष्मीलता,** प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने नेशनल सेन्टर फोर सस्टेनबिल कोस्टल मैनेजमेन्ट (एन सी एस सी एम) द्वारा आइ सी इज़ेड एम पी के कार्यान्वयन पर डी पी आर तैयार करने के लिए अन्ना विश्वविद्यालय के निदेशक का कार्यालय, पर्यावरण विभाग में 23 नवंबर 2015 को आयोजित गुणभोक्ताओं की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. वी. कृपा,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने के यु एफ ओ एस में 31 दिसंबर 2015 को आयोजित फिशरी हाइड्रोग्रफी बोर्ड ऑफ स्ट डीस की बैठक में भाग लिया।
  कोल्लम जिलाधीश के कार्यालय में 30 दिसंबर 2015 को आयोजित सीपी परिषद बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. वी. कृपा, डॉ. डी. प्रेमा** और **डॉ. आर. जयभास्करन** ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 22 अक्तूबर 2015 को आयोजित मड बैंक ग्रुप बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. आर. नारायणकुमार,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने कोच्ची में 17-18 अक्तूबर 2015 को आयोजित मछुआरा क्षमता वर्धन बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. आर. जयभास्करन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आइ एन सी ओ आइ एस, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा 30 नवंबर से 4 दिसंबर 2015 के दौरान एन आइ ओ, गोवा में "हिन्द महासागर की गतिशीलताः परिप्रेक्ष्य एवं पूर्वावलोकन" विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में भाग लिया।
- **डॉ. के. विजयकुमारन,** प्रधान वैज्ञानिक ने चेन्नई में 15 अक्तूबर 2015 को एन सी एस सी एम द्वारा आयोजित गुणभोक्ता बैठक में भाग लिया।
  संयुक्त सचिव (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प द्वारा कृषि भवन, नई दिल्ली में 29 अक्तूबर, 2015 को बी ओ बी एल एम ई फेस II और एस ए पी प्रलेखन पर चर्चा करने के लिए आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. शोभा जो किषकूडन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी आइ बी ए, चेन्नई में 29 अक्तूबर 2015 को डॉ. ए. के. सिंह (उप महानिदेशक-भा कृ अनु प) द्वारा पूर्व-पश्चिम मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों

पर आयोजित कृषि पारिस्थिति तंत्र कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. ए. के. अब्दुल नासर,** प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में 17 नवंबर 2015 को 'मैरिकल्चर एस्टेट पॉलिसी' पर आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी. कलाधरन,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ. टी. एम. नजमुदीन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी एम एल आर ई और एन ओ आर आइ एन सी ओ द्वारा कोच्ची में 10 दिसंबर 2015 को अकोस्टिक्स उपयुक्त करके आवास तंत्र और जल खंड विश्लेषण पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।
- **डॉ. आर. जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 16 नवंबर 2015 को चेन्नई में मात्स्यिकी आयुक्त के कार्यालय में चेन्नई ओशियनेरियम की स्थापना के लिए आयोजित पी-बिड सम्मेलन में भाग लिया।
- **डॉ. पी. रमेशकुमार, डॉ. वी. जोनसन, डॉ. आर. शरवणन** और **डॉ. के. के. अनिकुट्टन,** (वैज्ञानिक गण) ने 18 और 19 नवंबर 2015 को सी एम एफ आर आइ चेन्नई अनुसंधान केन्द्र में आयोजित जनगणना पूर्व कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ. आर. शरवणन,** वैज्ञानिक ने तंकच्चिमडम में एम एस एस आर एफ द्वारा 22 दिसंबर 2015 को आयोजित जिला स्तरीय एफ एफ एम ए गुणभोक्ता बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. जीना एन. एस.,** वैज्ञानिक ने बांगलूर में 15 अक्तूबर 2015 को थेर्मो फिशर सैन्टिफिक द्वारा आयोजित जेनेटिक सोलूशन्स टूर, इंडिया परिचर्चा में भाग लिया।
- **डॉ. मोहम्मद कोया,** प्रभारी वैज्ञानिक, वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने पोर्ट ब्लेयर में भा कृ अनु प-केन्द्रीय द्वीप कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर, आन्डमान एवं निकोबार द्वीप और भा कृ अनु प-कृषि प्रौद्योगिकी प्रयोग अनुसंधान संस्थान, बंगलूरु, कर्नाटक द्वारा संयुक्त रूप से "द्वीप क्षेत्र में कृषि एवं संबंधित सेक्टर के विकास के लिए कार्यनीतियाँ" विषय पर 18 नवंबर 2015 को आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **श्री विनय कुमार वास,** वैज्ञानिक ने वाइल्डलाइफ ट्रस्ट इंडिया (डब्लियु टी आइ), टाटा केमिकल्स और वन विभाग, गुजरात सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 11 दिसंबर 2015 को मांग्रोल, जुनगढ़, गुजरात में आयोजित 'विश्व तिमि सुरा दिवस-2015' समारोह में भाग लिया।
- **डॉ. विपिन कुमार वी. पी.,** प्रधान वैज्ञानिक ने जिलाधीश कार्यालय, काक्कनाड, कोच्ची में 09 दिसंबर 2015 को आयोजित एरणाकुलम जिला के कुटुम्बश्री सी डी एस अध्यक्षों की जिला स्तरीय बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. श्याम एस. सलिम,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन एफ डी बी) कार्यालय, हैदराबाद में 15 दिसंबर 2015 को संयुक्त सचिव (मात्स्यिकी) की अध्यक्षता में आयोजित मात्स्यिकी योजनाओं पर केन्द्रीय समिति की प्रथम बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी. षिनोज,** वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई में 02 से 04 दिसंबर 2015 के दौरान आयोजित ए ई आर ए वार्षिक सम्मेलन 2015 में भाग लिया।
- **डॉ. ग्रिनसन जोर्ज,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कोच्ची में 16 दिसंबर 2015 को आयोजित गुणभोक्ता परामर्शः स्केलिंग अप ऑफ फिशर फ्रन्ड मोबाइल एप्लिकेशन विषयक बैठक में भाग लिया।
- **श्री लवसन एड्वेर्ड,** वैज्ञानिक ने ई जी आर ई ई फाउन्डेशन द्वारा विशाखपट्टणम में 5 नवंबर 2015 को आयोजित "व्यापक प्रतिनिधित्व द्वारा ज्ञान प्रबंधन का विकास" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय अनुसंधान बैठक मे भाग लिया।

मानव संपदा विकास

कार्यशाला / प्रशिक्षण / सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	भागीदार
जी यु एल एल एस (स्थानीय समाधान के लिए वैश्विक सीख: समुद्र पर निर्भर तटीय समुदायों की सुभेद्यता कम करना) व्यवस्था मोडल्स कार्यदल बैठक	3-9 अक्तूबर 2015 क्यून्सलैन्ड बयोसयन्सस प्रेसिक्ट (क्यू बी पी) ब्रिस्बेन, आस्ट्रेलिया	डॉ. टी. वी. सत्यानन्दन, डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. पी. यु. जक्करिया (प्रधान वैज्ञानिक गण) डॉ. श्याम सलिम (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
मात्स्यिकी शासन पर अंतर्राष्ट्रीय "लघु पाठ्यक्रम"	30 नवंबर - 18 दिसंबर, 2015 नवोन्मेषी विकास केन्द्र, वागनीन्गेन यु आर, दि नेतरलैन्ड्स	डॉ. शुभदीप घोष (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
सुरा और मान्टा रे मछली पर सी आइ टी ई एस क्षमता वर्धन कार्यशाला अनुसूची ।।	15-16 दिसबर 2015, कोच्ची	डॉ. पी. यु. जक्करिया (प्रधान वैज्ञानिक) डॉ. टी. एम. नजमुदीन, डॉ. रेखा जे. नायर (वरिष्ठ वैज्ञानिक - गण)
"मात्स्यिकी स्टॉक निर्धारण एवं आवासतंत्र प्रतिरूपण" पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	6-22 सितंबर 2015, ओपरेशनल ओशियनोग्राफी, के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, ई एस एस ओ-आइ एन सी ओ आइ एस, हैदराबाद	डॉ. जी. बी. पुरुषोत्तमा, (वैज्ञानिक)
"टिकाऊ मत्स्यन की ओर" विषय पर कार्यशाला	05 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, सी आइ एफ टी और एन ई टी एफ आइ एस एच, एम पी ई डी ए द्वारा अर्नाला मछुआरा संघ, अर्नाला में आयोजित	डॉ. जी. बी. पुरुषोत्तमा, श्री आर. रतीशकुमार (वैज्ञानिक गण)
"जी आइ एस उपयुक्त करके प्रगति पर निगरानी और पिंजरा मछली पालन के लिए स्थान चयन" विषयक समुद्री संवर्धन कार्यशाला पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना	13-14 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ विषिजम अनुसंधान केन्द्र	डॉ. ए. के. अब्दुल नासर, डॉ. आर. जयकुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण), डॉ. अमीर कुमार समल, डॉ. के.के. अनिकुट्टन, डॉ. रितेश रंजन, डॉ. बिजी सेवियर और डॉ. शेखर मेघराजन (वैज्ञानिक गण)
"मेटाजीनोमिक्स: अगली पीढ़ी अनुक्रमण और बयोइन्फोमाटिक्स की भूमिका" विषय पर अल्पकालीन पाठ्यक्रम	26 अक्तूबर - 4 नवंबर 2015 आनंद कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात	डॉ. प्रदीप एम. ए., (वैज्ञानिक) डॉ. एस. आर कृपेश शर्मा, (प्रधान वैज्ञानिक)

सार्वजनिक खरीद	26-31 अक्तूबर 2015, एन आइ एफ एम, फरीदाबाद	श्री एन. विश्वनाथन (सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी)
महिला वैज्ञानिकों के लिए जीवन यापन विज्ञान	26-30 अक्तूबर 2015, वडोदरा, गुजरात	डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, (प्रधान वैज्ञानिक)
शंबु संतति उत्पादन एवं स्पैटों का पालन	27-28 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. के. एस. मोहम्मद, डॉ. आइ. जगदीश, (प्रधान वैज्ञानिक गण), डॉ. वी. वेंकटेशन, (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. आर. विद्या, सुश्री एम. कविता, (वैज्ञानिक गण)
"विज्ञान में फिलोसफी, मेथेड्स और एथिक्स" विषय पर आपसी सह अध्ययन कार्यशाला	03-05 नवंबर 2015, सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र 16-18 नवंबर 2015, सी एम एफ आर आइ चेन्नई अनुसंधान केन्द्र	श्री आर. रतीशकुमार, डॉ. के. वी. अखिलेश, और श्री अजय डी. नाखवा (वैज्ञानिक गण) श्रीमती हेमशंकरी, डॉ. श्रीनिवास राघवन, डॉ. आर. गीता, सुश्री इंदिरा दिविपाला और सुश्री ई.एम. छन्दप्रज्ञदर्शिनी (वैज्ञानिक गण)
टिकाऊ तटीय आजीविका के लिए योजना	16-20 नवंबर 2015, ए एन एस एस आइ आर डी, मैसूरु	डॉ. पी. एस. स्वातिलक्ष्मी (प्रधान वैज्ञानिक) डॉ. के. एम. राजेश (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
पौधा संरक्षण में आइ टी के की प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	28-29 नवंबर 2015, भा कृ अनु प- आइ ए आर आइ, पूसा, नई दिल्ली	डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
मराइन स्टिवार्डशिप काउन्सिल (एम एस सी) मात्स्यिकी प्रशिक्षण कार्यशाला	7 दिसंबर 2015, गेटवे होटल कोच्ची	डॉ. जोसिलीन जोस (प्रधान वैज्ञानिक), श्रीमती एम. मुक्ता, के. मोहम्मद कोया (वैज्ञानिक गण)
मराइन स्टिवार्डशिप काउन्सिल (एम एस सी) मिश्रित मात्स्यिकी कार्यशाला	8 दिसंबर 2015, गेटवे होटल कोच्ची	डॉ. जी. महेश्वरुडु, डॉ. के.के.जोषी, डॉ. लक्ष्मी पिल्लै, डॉ ई. एम. अब्दुसमद, डॉ सोमी कुरियाकोस (प्रधान वैज्ञानिक गण),डॉ. यु. गंगा (वरिष्ठ वैज्ञानिक)
मछली पौष्टिकता अनुसंधान में न्यूट्रीजीनोमिक्स पहल	8-18 दिसंबर 2015, भा कृ अनु प- सी आइ एफ ई, मुम्बई	श्री एस. चन्द्रशेखर, श्री डी. लिंग प्रभु (वैज्ञानिक गण)

गृहांदर प्रशिक्षण / कार्यशालाएं	तारीख एवं स्थान	भागीदार
"जलवायु परिवर्तन के प्रति समुद्री मछली संपदाओं की सुभेद्यता का निर्धारण" विषय पर एन आइ सी आर ए कार्यशाला	16-17 नवंबर 2015, चेन्नई अनुसंधान केन्द्र	डॉ. पी. यु. ज़क्करिया, डॉ. ए. पी. दिनेश बाबु, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. एम. शिवदास (प्रधान वैज्ञानिक गण), डॉ. शुभदीप घोष, डॉ. शोभा जे. किषकूडन (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण) श्री के. मोहम्मद कोया (वैज्ञानिक)
ट्यूना टैगिंग कार्यशाला	28-29 नवंबर 2015,	डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. के. एम. राजेश डॉ. शुभदीप घोष

आयोजित प्रशिक्षण / संगोष्ठी	तारीख एवं स्थान	द्वारा आयोजित
मात्स्यिकी और जलकृषि में प्रगतियाँ विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	12-27 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. एन. अश्वती, वरिष्ठ वैज्ञानिक(ए टी आइ सी) डॉ. विपिन कुमार, प्रधान वैज्ञानिक श्री के. एम. डेविड, तकनीकी सहायक
उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन और तटीय आजीविका पर संगोष्ठी	4 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	
समुद्री अलंकारी मछली प्रजनन और स्फुटनशाला में संतति उत्पादन	27-31 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. के. मधु, प्रधान वैज्ञानिक
शंबु संतति उत्पादन और स्पैटों का पालन	27-28 अक्तूबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विषिजम अनुसंधान केन्द्र	डॉ. एम. के. अनिल, प्रधान वैज्ञानिक
मन्नार खाड़ी क्षेत्र की महिलाओं के लिए चुनी गयी समुद्री अलंकारी मछलियों के संतति उत्पादन में क्षमता वर्धन	28-30 अक्तूबर 2015, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	डॉ. जोनसन बी., वैज्ञानिक
मात्स्यिकी संपदाओं का परिरक्षण एवं प्रबंधन और सांख्यिकीय सर्वेक्षण	30 नवंबर-5दिसंबर 2015, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. ई. एम. अब्दुस्समद, प्रधान वैज्ञानिक
"विज्ञान में फिलोसफी, मेथेड्स और एथिक्स" विषय पर आपसी सह अध्ययन कार्यशाला	03-05 नवंबर 2015, सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र 16-18 नवंबर 2015, सी एम एफ आर आइ चेन्नई अनुसंधान केन्द्र	डॉ. के. विजयकुमारन, प्रधान वैज्ञानिक

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्री शंकर एम.	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	07.10.2015
सुश्री पी. गोमती	वैज्ञानिक	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	12.10.2015
कुमारी आरती आर. पिल्लै	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.10.2015
श्री जिजिल के. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.10.2015
श्री गांधिया नूरममद अलिभाय	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	07.10.2015
श्री आर. युवराज	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	16.10.2015
सुश्री निरंजना ए.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	23.12.2015
श्री येन्नी प्रसाद बाबु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	16.12.2015
कुमारी नन्दना पी. आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	18.12.2015
श्री शांतकुमार ए.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	23.12.2015

पदोन्नति

नाम एवं पदनाम	पदोन्नत पद	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्री के. रामदासन, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.10.2015
श्री आर. श्रीनिवासन, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	15.10.2015 (पूरवाह्न)
श्री विनोद पी. बगयतकर, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	06.10.2015
श्री जे. विनोद प्रभु वास, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	09.10.2015 (अपराह्न)
सुश्री सी. पुष्पा राणी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	13.10.2015 (अपराह्न)

स्थानांतरण

नाम एवं पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्री पाउलोस जेकब पीटर, तकनीशियन	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	कोइलोन क्षेत्र केन्द्र	05.10.2015
श्री षिजु पी., तकनीशियन	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	आंकडा संग्रहण पोइन्ट, कण्णूर	30.10.2015
श्री श्रीकृष्ण पांडुरंग होटेकर, तकनीशियन	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	अलिबाग क्षेत्र केन्द्र	12.10.2015
श्री एम. पी. जाधव, तकनीशियन	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	08.10.2015
श्री एम. कला मल्लिक, तकनीशियन	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	पुरी क्षेत्र केन्द्र	12.10.2015
श्री इन्द्रानिल मुखर्जी, तकनीशियन	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	कोन्टै क्षेत्र केन्द्र	13.10.2015
श्री यु. जयराम, वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कन्याकुमारी क्षेत्र केन्द्र	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	06.11.2015
श्री संतोषी, वरिष्ठ तकनीशियन	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला	28.10.2015
श्री पी. राजेन्द्रन, तकनीशियन	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	कन्याकुमारी क्षेत्र केन्द्र	03.11.2015
श्री एम. शरवणकुमार, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	26.12.2015

अंतरसंस्थानीय स्थानांतरण

नाम एवं पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
डॉ. एस. एस. राजु, प्रधान वैज्ञानिक	कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान का राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	21.12.2015
श्रीमती क्रिस्टीना जोसफ सहायक प्रशासनिक अधिकारी	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	प्रशासनिक अधिकारी भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, कोच्ची	08.10.2015 (अपराह्न)
श्री के. एस. श्रीकुमारन सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	वित्त एवं लेखा अधिकारी भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, कोच्ची	31.12.2015 (पूरवाह्न)

बैठकें

1. भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की संस्थान प्रबंधन समिति की 78वीं बैठक कोच्ची में 28 दिसंबर 2015 को आयोजित की गयी।

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्तियाँ

श्री के. सी. प्रदीप कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
31.10.2015
कालिकट अनुसंधान केन्द्र

श्री यु. बी. सदाशिवा
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
31.10.2015
मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

श्रीमती के. वी. रमा
तकनीकी अधिकारी
30.11.2015
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री वी. जे. तोमस
तकनीकी अधिकारी
30.11.2015
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्रीमती के. पारुकुट्टी
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
30.11.2015
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री एन. पी. मोहनन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
30.11.2015
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री के. टी. मोहनन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
30.11.2015
कालिकट अनुसंधान केन्द्र

श्री वी. नरसिंह भारती
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
30.11.2015
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र

श्री के. पी. जोण
उच्च श्रेणी लिपिक
31.12.2015
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री एम. सामुएल सुमित्रुडु
तकनीकी अधिकारी
31.12.2015
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र

नव वर्ष समारोह

मुख्यालय में नव वर्ष समारोह का दृश्य

मुख्यालय में वर्ष 2016 के कलैन्डर के विमोचन का दृश्य

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में नव वर्ष समारोह का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में नव वर्ष समारोह का दृश्य

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ परिवार की ओर से सभी पाठकों को संतोष एवं समृद्धि के नव वर्ष 2016 की बधाइयाँ

CAGE AQUACULTURE IN ASIA 5

November 25-28, 2015 Kochi India

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, सी ए ए 5 का आयोजक एवं भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की आयोजन समिति
डॉ. जे. के. जेना, अध्यक्ष, ए एफ एस आइ बी और प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल के साथ

कृपया पृष्ठ सं. 3 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।